।। श्री गोकुलनाथ जी विरचित।।

खटऋतु की वार्ता

(अष्टछाप के कवि चतुर्भजदास कथित)

उत्थानिका- सो एक समें श्री गुसांईजी श्री गोपालपुर में श्री गोवर्द्धनधरन की सेवा करिवे को प्रात:काल के समें अस्नान करिकें अपनी बैठक सों पधारे। तब चतुर्भुजदास को आज्ञा किये, जो तू अप्सरा कुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरिया सो कहियो, जो- तुम को श्रीगुसांईजी बुलावें हैं। और फूल मिले सो लेतो अइयों। ताही समय चतुर्भुजदास श्री गुसांईजी को दण्डवत करि पूंछरी के आडी जाय

कैं, रामदास भीतरिया की गुफा में जाय कैं, रामदास भीतरिया सो कही,जो-तुम्हें श्री गुसांईजी बुलावें है। ताही समय रामदास श्री गिरिराजजी ऊपर श्रीजी के मंदिर को चले। और चतुर्भुज फूल बीनत श्री गिरिराजी की कन्दरा में भूलि के चले गये। तहाँ देखे तो श्री गोवर्द्धननाथ जी श्री स्वामिनीजी सहित भीतर कन्दरा में बिराजें है। सो दर्शन करिकें चतुर्भुजदास ने दण्डवत करी।

ता पाछें श्री गोवर्द्धननाथ जी चतुर्भुज दास सो आज्ञा किये जो-अरे चतुर्भुजदास ! तू यहाँ या समें प्रात:काल कहाँ सूँ आयों ? तब चतुर्भुजदास ने विनती कीनी, जो -कृपानाथ ! मोकों श्रीगुसांईजी ने फूल लेवे को पठायों है। सो मैं फूल लेते लेते कंदरा में भूलि के चल्यों आयो हूँ। तब श्री गोवर्द्धननाथजी आपु चतुर्भुजदास की भोरी भोरी बातें सुनिकें बहोत प्रसन्न भये। और अपुने मनमें प्रसन्न होय के आज्ञा किये, जो चतुर्भजदास तू कछु माँगि। मैं तेरे उपर बहोत प्रसन्न भयो हूँ। तब चतुर्भुजदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! आपकी नित्यलीला को दरसन भूतल के दैवी जीवन कों कौन भंति सों होय ?

तब श्री गोवर्द्धननाथ जी आज्ञा किये, जो-

चतुर्भुजदास ! तू सुनि, मैं तोसों आज्ञा करत हों। जो मैंने मेरे षट्सपत्ति स्वरूप भूतल पें प्रगट किये हैं। सो जो कोऊ या षट्संपत्ति स्वरूप कों भली भांति सों सेवेंगे, काम, क्रोध, मोह, मद, लोभ, मत्सरता, सो ये षट् अपराधन सों बचि कें मेरो सुमिरन करेगे, तो मैं उन जीवन कों दूसरी देह दउंगों। तब ये सखी देह सों मेरे पास अवेंगे। पाछे यहां आयकें श्री स्वामिनीजी की दासी होंयगी तो अनेक रासादि लीला के दरसन कराउंगो। और जो श्रीस्वामिनीजी सों इर्षा राखेंगी तो पाछे भूतल पें पड़ेगी। और अनेक जन्म को अंतराल परेगो।

ता पाछे चतुर्भुजदास ने विनती कीनी, जो- महाराज ! आपने षट् सपत्ति स्वरूप सेइवे की आज्ञा करी सो कौनसे जानिये?

तब श्री ठाकुर जी कृपा करि के आज्ञा, किये, जो- चतुर्भुजदास ! तू सुनि, जो एक तो मेरो मूरती स्वरूप पुष्टि है। दूसरो श्री आचार्यजी को कुल। तीसरो श्री यमुनाजी। चौथो स्वरूप श्री गिरिराजजी पाछे पॉचमो स्वरूप श्रीभागवत। और छटमों ब्रजमण्डल। सो ये छेओ निधि स्वरूप मेरो स्वरूप जाननो।

तब इतनी आज्ञा सुनि के चतुर्भुजदास ने फिरि विनती कीनी, जो कृपानाथ ! आपकी आज्ञा होय तो मैं नित्यलीला कीरतन वार्ता भूतल के दैवी जीवन को सुनाऊँ। तब श्री गोवर्द्धननाथ जी मुसिकाय के आज्ञा किये, जो- तेरो दैवी जीवन पर ऐसो स्नेह है तो सुखेन वर्णन करि। तोकों सर्व लीला- स्फूर्ति होयगी।

ता पाछें श्री ठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी अपने ब्रजभक्तन सहित कन्दरा सों निकसि परवत ऊपर अपने मन्दिर में पधारे। सो ता समेंकी शोभा देखि कें चतुर्भुजदास ने एक कीरतन गायो। सो पद :-

राग-भैरव

श्री गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा,
रैन निवास कियोपियप्यारी।
उठ चलजें भोर सुरत रंगभीने,
नन्दनन्दन वृषभान दुलारी।।1।।
इति विगलित कचमाल मरगजी,
अटपटे भूषन, रगमगी सारी।
उतही अधर मसि पाग रही धसि
दुहुं दिस छबि बाढो अति भारी।।2।।

घूमत आवत रतिरन जीते करनी
संग गज गिरिवरधारी।
'चतुर्भुजदास' निरखि दंपति छवि
तन मन धन कीनो बलिहारी।।3।।

ता पाछें चतुर्भुजदास फूल लेकें श्रीजी के मन्दिर में आये। सो आयकें फूलघर में फूल पहुँचाये। ता पाछें श्री गुसांईजी मंगलभोग धरिकें बाहर पधारे। तब चतुर्भुजदास ने साष्टांग दण्डवत् कीनी। तब श्री गुसाँईजी आज्ञा किये, जो- चतुर्भुजदास ! तोकों इतनी बेर कहाँ लगी ? तब चतुर्भुजदास ने सब समाचार विधिपूर्वक कहे। सो सुनिकें श्री गुसाँईजी बहोत प्रसन्न होय के आज्ञा किये, जो तू धन्य है। जो तेरे माथे श्रीनाथजी की कृपा है।

ता पाछें चतुर्भुजदास नित्यलीला वार्ता वरनन करन लगे। तहाँ श्री गुसाँईजी के चरनारविन्द को ध्यान करिकैं कहिवे लगे-

अथ खटऋतुन की वार्ता

श्री नन्दकुमार सदा सर्वदा ब्रजमें विराजत हैं, तिनकी निजवार्ता कहते हैं:-

जो एक समें श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी, श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी तथा अष्टसखी आदि अनेक ब्रजभक्तन कों संग लेकै स्यामढाँक सों बिलछु कुण्ड पें पधारे। सो वहाँ स्याम तमाल के नीचे बिराजें। सो विलछु कुण्ड की शोभा देखि कैं श्रीठाकुरजी बहोत प्रसन्न भये। और किये

जो- या समें कछु गान कीजे। तब श्रीस्वामिनीजी कहैं, जो- पहले आपु कछु गाइये। तब श्रीठाकुरजी ने वेणुगीत को एक श्लोक मुरली में अद्‌भुत गान कियो। सो श्लोक-

"बर्हापीडं नटवरवपु: कर्णयो: कर्णिकारम्।
बिभ्रद्वास: कनककपिशं वैजयन्तीच् मालाम्।।
रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दै:।
वृन्दारण्यं स्वपदरमणं प्राविशद् गीतकीर्ति:"।।1।।

ता पाछें श्रीठाकुरजी ने स्वामिनीजी सों आज्ञा कीनी, जो- अब कछु आपहू गाइये। तब श्रीस्वामिनीजी ने श्रीयमुनाजी को पास बुलाय कें कही, जो- हम तुम मिलि के गान करें। तब दोउ स्वरूप मिलि कें गान किये। सो दोय श्लोक युगलगीत के अद्‌भुत अलौकिक गान किये। सो श्लोक-

'वामबाहुकृत बाम कपोलो वल्गितभ्रुरधरार्पितवेणुम्।
कोमलांगुलिभिराश्रित मार्ग गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्द:।।1।।
व्योमयानवनिता: सह सिद्धैर्विस्मितास्तदुपधार्य सलज्जा:।
कामर्मार्गण समर्पित चित्ता: कश्मलं ययुरपस्मृतनीव्य:।।2।।

तब वा समय की कैसी शोभा भई, जो-जितनेक ब्रजभक्त हे सो सब गान सुनि कैं चित्र के से लिखे रही गये।

सो ता पाछें श्रीठाकुरजी ने वेणुनाद करि कें सबनकी मूरछा दूरि कीनी। तब श्रीस्वामिनीजी के मनमें अति आनन्द बढयो। ता पाछें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी सों आज्ञा करी, जो -प्यारे ! एक मेरो मनोरथ है। जो-एक नवीन निकुंज खटऋतुन के विभाग सहित रतन जटित अद्भुत अलौकिक रचना करो। तो एक अष्टयाम की लीला नित्य नौतन करें। एक दिनरात्र में छेओ ऋतुन की छेओ निकुंजन में पधारि आमें। और हमारे छेओ स्वरूपन के मनोरथ सहित वस्तुभाव सिद्ध होय।

तिनके नाम : एक श्रीठाकुरजी, दुसरे श्रीस्वामिनीजी, तीसरे श्रीयमुनाजी, चौथे श्रीचन्द्रावलीजी, पाँचमें श्रीललिताजी छटमें श्रीविसाखाजी।

इतनी सुनि के श्रीठाकुरजी बोले, प्यारी ! जो आज्ञा ! ता पाछें श्रीठाकुरजी अष्टसखीन को पास बुलाइ, श्रीललिताजी, श्रीविसाखाजी, दोड निज प्रिय सखीन कों श्रीहस्त पकरिकैं अपुने पास बुलाय लिये।

तब छेओं सखी रही, सो बहोत उदास भई। जो-आज के श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ में हमही रहि गई। जो ललिता विसाखा बड़ी बड़भागिनी हैं। तिनकों पास बुलाये।

ता पाछें श्रीठाकुरजी इनके मन की जानिकैं इन छेओं सखीन सों आज्ञा किये, जो-श्रीगिरिराज के भीतर तुम जाय कैं जुगल खट निकुंज खटऋतुन के अनुसार रत्नमय तथा पुष्पलतामय हमारे छेओं स्वरूपन के मनोरथ सहित सब वस्तु भाव संयुक्त अद्‌भुत अलौकिक रचना करो। तब छेओं सखी प्रसन्न होय कैं श्रीठाकुरजी सों आज्ञा मांगि कैं श्री गिरिराज जी के भीतर पधारे। तहॉं श्री गिरिराजजी कों दण्डवत् करिकैं बिनती कीनी, जो-श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी की ऐसी आज्ञा हैं। जो-जुगल खट निकुंज रचना करिवे की। तब यह सुनिकें श्रीगिरिराजजी प्रगट होय कैं छेओं सखीन कों दरशन दिये।

सो श्री गिरिराजजी को स्वरूप कैसो है ? जो-बारह बरस के बालक को सो, और लाल वस्त्र पहेरे हैं। और लाल छरी श्री हस्त में लिये हैं। और श्याम स्वरूप हैं। सो मन्द मन्द मुसिकाय के छओं

सखीन सों पूछें, जो-कहा आज्ञा है ?

तब छेओं सखीन ने सब मनोरथ विस्तारपूर्वक कह्यो, जो- श्रीस्वामिनीजी को मनोरथ रतनजटित छै निकुंज छैओं ऋतुन के विभाग सहित करिवे को है। और श्रीठाकुरजी को मनोरथ पुष्पलतामय छैऊ निकुंज छैओं ऋतुन के अनुसार श्रीस्वामिनीजी के निकुंजन के भेले भेले रचना करिवे को है। जैसे एक ऋतु के दोय मास होय हैं तैसेही एक ऋतु के दोय निकुंज एक-एक रत्नमय और एक-एक पुष्पलतामय।

या भाँति छेओं सखीन की बात सुनिकैं सखीन पैं श्रीगिरिराजजी बहोत प्रसन्न भये। ता पाछे श्रीगिरिराज जी छेओं सखीन कों संग लै निकुंज रचना करिवे कों पधारे।

तहाँ प्रथम श्री स्वामिनीजी के मनोरथ की वसन्त ऋतु की पुखराज की जटित निकुंज किये। सो चरनघाटी सों ले दंडौती सिला ताँई। दूसरो निकुंज पुष्पलतामय। सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ को। सूर्य उदय तें दस घरी दिन चढ़े ताँई बसंत ऋतु सदा रहें।

दूसरी निकुंज श्रीललिताजी के मनोरथ की ग्रीष्मऋतु की पन्ना की जड़ाउ सोनाकी किये। दूसरी निकुंज पुष्पलतामय सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। सो दंडोती सिला तें मानसी गंगा ताँई। दस घरी दिन चढ़े तें दस घरी दिन रहे ताँई ग्रीष्म ऋतु सदा रहे।

तीसरी निकुंज श्रीविसाखाजी के मनोरथ की बरसा ऋतु की मानिक की जडाऊ सोनाकी किये। मानसी गंगा तें श्रीकुण्ड ताँई। दूसरी श्रीठाकुरजी के मनोरथ की पुष्पलतामय। दस घरी दिन रहे ते सायंकाल ताँई बरसा ऋतु सदा रहें।

चौथी निकुंज श्रीचन्द्रवलीजी के मनोरथ की शरद ऋतु की हीरा की जड़ाऊ सोना की किये। दूसरी निकुंज श्रीठाकुरजी के मनोरथ की पुष्पलतामय। श्रीकुंड तें लैकें चन्द्रसरोवर ताँई। परमरासस्थली ताँई। सायंकाल तें लगाय दस घरी राति आए ताँई शरद ऋतु सदा रहें।

पाँचमी निकुंज श्रीयमुनाजी के मनोरथ की हेमन्त ऋतु की लहरियादार मीना की किये। दूसरी निकुंज श्रीठाकुरजी के मनोरथ की पुष्पलतामय। चन्द्रसरोवर तें लैंके आन्यौर ताँई। दस घरी रात्रि

आये ते दस घरी रात्रि रहे तॉई हेमन्त ऋतु सदा रहे।

छठी निकुंज श्रीठाकुरजी के मनोरथ की शिसिर ऋतु की नीलमनि जडाऊकी किये। दूसरी निकुंज श्रीठाकुरजी के मनोरथ की पुष्पलतामय। आन्यौर तें लैकें गोविन्द कुंड सघन कंदरा तॉई। दस घरी रात्रि रहे तें सूर्य उदय तॉई शिसिर ऋतु सदा विराजे।

या भॉति श्रीगिरिराजजी ने छेओं ऋतु प्रकट किए। जो रात्रि दिन की साठ घरी में। श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी की आज्ञा तें स्यापन किये। ता पाछें श्रीगिरिराजजी गिरिराज में अंतर्धान भये।

ता पाछें छेओं सखीन ने जहॉ श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीललिताजी, श्रीविसाखाजी ये छेओं स्वरूप बिराजे हते तहॉ आय विनती कीनी। जो कृपानाथ ! द्वादस निकुंज खट तो रतन जटित और खट पुष्पलतामय खट ऋतुन के संयुक्त सब सिद्ध हैं। कृपा करि कैं एक बार अवलोकन कीजिए।

सो तही समय छेओं स्वरूप प्रसन्न होई कैं

श्रीगिरिराजजी की कन्दरा में पधारे।तहाँ प्रथम श्रीयमुनाजी के तीर पधारि के श्रीयमुनाजी कों आज्ञा किए, जो- अब आप दोउ स्वरूप सों श्रीगिरिराज भीतर निकुंज में विराजो।

ता पाछे आपु कन्दरा में होय कै भीतर पधारें। तहाँ श्रीगिरिराजजी को स्वरूप रत्नमय देख्यो। और श्रीयमुनाजी की सीढी हू रत्नजटित देखी।

ता पाछे बसंत ऋतु की निकुंजन में पधारे। तहाँ श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ की पुखराज की जडाऊ निकुंज। तामें अस्नान : सिंगार : गोपीवल्लभभोग। दूसरी पुष्प की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ डोल उत्सव और इनको नाम बसन्ती सखी भयो।

ता पाछे ग्रीष्म ऋतु की निकुंजन में पधारे। तहाँ एक निकुंज पन्ना के जडाउ की सो श्रीललिताजी के मनोरथ की। तहां राजभोग। दूसरी पुष्प की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ फूलमण्डली को उत्सव। ता पाछें इनको दूसरो नाम ग्रीष्म सखी भयो।

ता पाछे वरषा ऋतु की निकुंजन में पधारे।

तहाँ मानिक के जड़ाऊ की निकुंज। सो श्री विसाखाजी के मनोरथ की। तहाँ उत्थापन भोग। दूसरी पुष्प की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की तहाँ हिंडोरा झूलिवे को उत्सव। और इनको दूसरो नाम बरषा सखी भयो।

ता पाछे शरद ऋतु की निकुंजन में पधारे। तहाँ हीरा के जडाऊ की निकुंज। सो श्रीचंद्रावलीजी श्रीप्राणेश्वरीजु के मनोरथ की। तहाँ सेन भोग। दूसरी पुष्पन की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ रासोत्सव। और इनको दूसरो नाम श्रीठाकुरजी ने शरद सखी धरयो।

ता पाछे हेमन्त ऋतु की निकुंज में पधारे। तहाँ एक निकुंज लहेरियादार सोना की मीना के जडाऊ की। सो श्रीयमुनाजी महारानीजू के मनोरथ की। तहाँ अनोसर में कुनवारो आरोगायवे को मनोरथ। दूसरी पुष्पन की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ जागरन के मनोरथ को उत्सव। और तिनको दूसरो नाम हेमन्त सखी ध ारयो।

ता पाछें सिसिर ऋतु की निकुंजन में पधारे।

तहाँ नीलमनि जडाऊ की निकुंज। सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ मंगल भोग। दूसरी पुष्पन की निकुंज सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ की। तहाँ होरी खिलायवे को मनोरथ और इनको दूसरो नाम शिसिर सखी धरयो।

सो या भाँति श्रीठाकुरजी ने षट निकुंजन के नाम धरे। और छेओ सखी ही तिनके नाम छेओं ऋतुन के हैं। सोई धरें।

ता पाछें शिसिर सखी दोय थार सामग्री के भोग धरें सो छेओं ऋतुन के नाम :-

1. चैत-वैसाख, बसंत ऋतु के सो धरें।
2. ज्येष्ठ-आषाढ, ग्रीष्म ऋतु के सो धरें।
3. श्रावण-भादों, बरषा ऋतु के सो धरें।
4. आश्विन-कार्तिक, शरद ऋतु के सो धरें।
5. मार्गसिर्ष-पौष, हेमन्त ऋतु के सो धरें।
6. माघ-फाल्गुन, शिसिर ऋतु के सो धरें।

या प्रकार षटऋतुन के बारह मास कहे हैं। सो या भांति श्रीस्वामिनीजी की आज्ञा तें श्रीठाकुरजी ने एक दिन रात्रि में छेओं ऋतुन को छैओं निकुंजन में स्थापना करी।

ता पाछें श्रीठाकुरजी ने छत्तीसों राग

रागिनीन कों बुलाय के आज्ञा करी, जो-तुम छै छै सखी रूप होय के छत्तीसों बाजेन सहित एक एक ऋतु की निकुंजन में छै छै समें अनुसार श्रीस्वामिनीजी की आज्ञा तें नृत्य गान तथा बाजे सावधानी सों बजाइयों। तब छत्तीसों राग रागिनी श्रीठाकुरजी को दण्डवत करि कैं छैओ निकुंजन में छै छै बाजे सहित छै छै पधारे। सो तिन छत्तीसों रागिनीन के तथा छत्तीसों बाजेन के नाम कहत हैं:-

राग रागिनीन के नाम

1.मलार	2.ललित	3.पंचम
4.आसावरी	5.भैरव	6.मालव
7.टोडी	8.कल्याण	9.गुर्जरी
10.मालवा	11.गोडी	12.बिलावल
13.धनाश्री	14.रंगिली	15.खंमाच
16.देसाख	17.कान्हरो	18.गोडमल्हार
19.केदारो	20.षट्मंजरी	21.रामकली
22.गंधार	23.बराडी	24.कुकुंभ
25.कामोद	26.नट	27.गुनकली
28.माधवी	29.देस	30.बिभास
31.हास	32.काफी	33.सोरठ
34.ईमनि	35.जेवंती	36.सारंग

बाजेन के नाम

1.बीनाचीन	2.मुरली	3.अमृतकुंडली
4.जलतरंग	5.मदनभेरी	6.घोंसा
7.दुंदुभी	8.निसान	9.नगाड़ा
10.शंख	11.घन्टा	12.मोहोचंग
13.सींगी	14.खंजरी	15.ताल
16.षट्ताल	17.मंजीरा	18.मुहवरि
19.थारी	20.झालर	21.ढोल
22.डफ	23.डिमडिमी	24.झांझ
25.मृदंग	26.गिडगिडी	27.पिनाक
28.रबाब	29.जंत्र	30.शहनाई
31.श्रीमण्डल	32.सारंगी	33.दूधारी
34.करताल	35.तुरई	36.किन्नरी

ता पाछे श्रीठाकुरजी ने श्रीस्वामिनीजी सों आज्ञा करी, जो हे प्यारी ! आप अब इन निकुंजन में अष्टजाम की लीला भली भाँति सों नित्य नौतम करो। तब श्री स्वामिनीजी बहोत प्रसन्न होय कैं कहें जो प्यारे ! आज ही सों आरंभ करेंगे।

ता पाछें श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी, श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीविसाखाजी, आदि सब ब्रजभक्तन

सहित सायंकाल के समें शिसिर ऋतु की निकुंज में नीलमनि के जडाऊ की चित्रसारी के भीतर पधारे। तहाँ जडाऊ की सिज्या पर श्रीठाकुरजी तथा श्रीस्वामिनीजी दोय स्वरूप विराजे। और श्रीयमुनाजी, श्रीचंद्रावलीजी, श्रीललिताजी, श्रीविसाखाजी, चारों स्वरूप सिज्या के पास श्रीस्वामिनीजी की आज्ञा ते चोकेन पर विराजे। और सब ब्रजभक्त सिज्या के चारयों ओर ठाडे रहे।

तहाँ सैया के ऊपर श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी विराजि कैं आज्ञा करे, जो प्रातःकाल सों अष्टजाम की लीला होयगी सो तुम छेओं सखी अपनी अपनी निकुंजन में परचारगी में सावधान होय कैं सब सोंज त्यारी भली भाँति सों करोगी। ता पाछे श्रीठाकुरजी ने सबन कों आज्ञा दिए, जो तुम सब अपनी अपनी निकुंज में सोओ। पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी बींरो आरोगि कैं नीलमनि की कुंजन में पोढे।

ता पाछे घरी छै रात्रि रही तब वा समय शिसिर सखीने जाय के मंगल भोग की सामग्री सिद्ध करि। पाछे रागनीन कों जगाय कैं आज्ञा करी, जो- तुम श्रीठाकुरजी की चित्रसारी के साम्हें जाय के

बजावो। तब ललित रागिनी बीन बजायवे लगी +। सो बीन सुनि के श्रीयमुनाजी श्रीचन्द्रावलिजी आदि सब व्रजभक्त अपनी अपनी निकुंजन सों सिंगार करि के बेगि वेगि जहां श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी पोढे हते तहां सिज्या के आडी आय विराजे। ता पाछे शिसिर सखी ने जुगल चरन चांपि के प्रभु कों जगाये।

ता पाछे सिज्या में दोउ स्वरूप गादी तकियान के उपर विराजे। सो नीलमनि की चित्रसारी की कैसी शोभा है ? जो मनीन के दीपक प्रकास करें हैं। और बहुत उंचे गादी तकिया कारचोबी के मखमल के हैं। ता ऊपर स्वरूप बिराजे हैं। श्रीठाकुरजी की दाहिनी ओर कों श्रीचन्द्रावलीजी श्रीविशाखाजी बिराजे हैं। और श्रीस्वामिनीजी की बांई आडी श्रीयमुनाजी ललिताजी पास बिराजे हैं। या प्रकार छेओ स्वरूप गादी तकियान उपर भेले बिराजे हैं।

और श्रीयमुनाजी सब निकुंजन में दोउ स्वरूपन

+ पाछें रागनीन को जगाय के आज्ञा करी जो श्रीठाकुरजी की चित्रसारी के साम्हे जाय के बीन बजावो। और, ललित रागनी ने मंद मंद सुर सों गायो। सो गान सुनि के......''ऐसा भी पाठ मिलता है।

सों बिराजे हैं। अधिदैविक स्वरूप सों श्रीठाकुरजी के पास जेंमनी आडी बिराजे हैं। और श्रीयमुनाजी को प्रागट्‌य हू श्रीठाकुरजी के जेंमने अंग सों हैं। और अधिभौति स्वरूप जल प्रवाह अद्‌भुद। सो मंद मंद शीतल छेओं निकुंजन में श्रीठाकुरजी ने स्थापन कियो है।

ता पाछें शिसिर सखी ने शीत ऋतु जानि कैं एक सोना की अंगीठी चौकी उपर साम्हे राखी। तामें कपूर के टूक करि के प्रकासी। ता पाछें शिसिर सखी ने मंगल भोग के छै थार में मनोरथ की सामग्री साम्हे पधराइ और सखडी तथा अनसखडी दूधघर तथा नागरी आदि अनेक भाँति की सामग्री धरी। तहाँ मनोरथ की सामग्री की विगत:-

श्रीठाकुरजी के मनोरथ के मनोहर के लडुवा। श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ के पंचधारी के लडुवा। श्रीयमुनाजी के मनोरथ के बूंदी के लडुवा। श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ के मेदा के मनोहर के लडुवा। श्रीललिताजीके मनोरथ के बेसन के मगद के लडुवा। और श्रीविसाखाजी के मनोरथ के सेब के लडुवा।

ता पाछें शिसिर सखी ने छेओं स्वरूपन के पास छेओं झारी श्रीयमुनाजी के जलकी सोनाकी भरि. कैं धरी। ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी बहोत प्रसन्न भये। तासों परस्पर हास्य विनोद सों अरोगे। ता पाछें महाप्रसाद अपने श्रीहस्त सों दोऊ स्वरूपन ने सब ब्रजभक्तन कों दिये। ता पाछें शिसिर सखी ने सोने के थार में मोती की आरती करी। इतने में सूर्य उदय को समें भयो।

ता पाछें बसंती सखी नें साष्टांग दंडवत करि विनती करी, जो-राज ! मेरी बसंत निकुंज में पधारो। सो इतनी बिनती बसंत सखी की सुनि कें दोऊ स्वरूप हरखि सों पधारे। सो कैसी शोभा सों पधारे ? जो - श्रीठाकुरजी वाम श्रीहस्त श्रीस्वामिनीजी के कन्धा ऊपर धरे हैं। दाहिनो श्रीहस्त श्रीचन्द्रावलिजी के कन्धा ऊपर धरे हैं। और श्रीस्वामिनीजी दाहिनो श्री हस्त श्रीठाकुरजी के कन्धा ऊपर धरे हैं। और वाम श्रीहस्त श्रीयमुनाजी के कन्धा ऊपर धरे हैं। और सखीजनन को झुरमुट पाछें ते संग हैं। और सब रागरागिनी नृत्यगान, और नाना प्रकार के बाजे सन्मख बजे हैं. और श्रीमस्तक पर स्याम पाग अति

ही शोभा देत है। मानो राति कों कोई रतिरन जीति कैं पधारे हैं। या भाँति हँसत हँसावत बसन्त निकुंज में पधारे तहाँ बसंती सखी ने सोना की चोक उपर पधराये।

ता पाछे बसंती सखी ने श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के नीलम के जडाऊ आभरन राति कों धराये हते सो सब बड़े करे। ता पाछें बसन्ती सखी ने श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को दोउ पीढा पर आमने सामने पधराये। पाछें दोनों स्वरूपन कों अभ्यंग कराये। श्रीठाकुरजी कों श्रीचन्द्रावलीजी श्रीविसाखाजी दोउ ने मिल कैं कराये, और श्रीस्वामिनीजी कों श्रीयमुनाजी श्रीललिताजी दोउन ने कराये। और बसन्ती सखी ने केशरिया उष्ण जल सोना की गागरन सों भरि कें अस्नान कराये। ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों कोमल वस्त्र सों अंग वस्त्र कराये। ता पाछें बसंती सखी ने केसरीया पीताम्बर दोनों स्वरूपन कों अंगीकार कराये। पाछें पुखराज की जटित चित्रसारी में केसरी रेसमी मखमल कारचोबी के बड़े बड़े गादी तकियान पर पध ाराये। और नाना भाँति के अत्तर, फुलेल अरगजा

आदि, कुंकुम, केसर, काजर, कांगसी, आरसी आदि सब साम्हें धरे। और केसरी गोटा किनारी के वस्त्र तथा पुखराज की जोड जडाउ आभरन के नास तें शिख पर्यंत के दोउ ठिकाने सोना के थार भरि कें धरें। तहाँ श्रीचन्द्रावलिजी श्रीविसाखाजी नें श्रीठाकुरजी कों सिंगार कियो। और श्रीयमुनाजी श्रीललिताजी नें श्रीस्वामिनीजी को सिंगार कियो। तहाँ प्रथम श्रीमस्तक में दोनो ठिकाने केस, प्रति प्रति मोतिन सों गूहे। और नख तें सिख तांई नाना भाँति सों सिंगार किये। तहाँ प्रथम श्रीठाकुरजी को सिंगार कहे है:-

वस्त्र केसरी गोटा किनारी के दोउ ठिकाने रूचि अनुसार धरें। और पुखराज की जोड। श्री मस्तक पें जडाउ मुकुट दाहिनी ओर झुक्यो। बाँई ओर सीस फूल चंद्रमा, तुर्रा, झोंरा, सुन्दर लर दूहरी। या प्रकार श्रीमस्तक पें छै आभूषन धरें। भाल उपर सुन्दर जडाउ केसरी खोर। तिलक कुंकुम को। नेत्रकमल में आरक्त डोर। कज्जल सों मिश्रित

+ "दोउ काननमें छै नग पहरे है। मोतिन के चाकडा, करन फूल, झुमका।" एक प्रति में ऐसा भी पाठ है। किन्तु मुकुट के सिंगार पर कुंडल मुख्य है। इसलिए उपर का पाठ ही मुख्य रखा है।

भोंहे धनुषवत्। नासिका सुआ सारिखी। तामें वेसर जडाउ। दोऊ कानन में मकराकृत कुंडल+ पहरे हैं श्रीमुख में बीडा को बरन। तहाँ दंतावली में मंद मंद मुसक्यान। दोउ कपोलन पर स्याम अलक की शोभा, ठोड़ी उपर चिबुकाभरन। श्रीकंठमाला गोपमाल, छै मोतिन की माला पुखराज के मनिन की। चन्दनहार सतलरा को। टिकडा मोटे मोतिन के मिश्रित। ता उपर गुज्जा को हार। ता पाछें दोउ भुजान में चन्द्रावलीजी नें छै नग पहराये, दो बाजु, दो बोड़ी,नवरतन की। श्रीहस्त में छै गहना, दो पहोंची, दो सांकलां, दो खडुला, मूंदरी छै धारन किये, तामें नखावली पर शोभा देत है। उंचो बक्ष:स्थल। कमर पतरी, तापें कोंधनी सोना की झीनी छै लड़ि की, तामें किंकिनी बजे। लाल सूथन पर केसरी काछनी, अत्तर सों सुगंधित हैं। ता पाछें चरनन में दोऊ, नूपुर, दोउ पायल, दोउ सांकला, यों छैं धरे। और गहना तो बहोत धरे, सो कहाँ ताँइ बरनन करें ? नखचन्दन की अति शोभा है। तहाँ कमल से चरनारविन्द। अनवट के अस्त्त पल्लवत् ताके नीचे षोडश चरनचिन्ह शोभित हैं-

दाहिने चरनारविन्द में-

1.ध्वजा	2.अंकुस	3.वज्र
4.कमल	5.स्वस्तिक	6.अष्टकोन
7.उर्द्धरेख	8.जव	9.कलस

बाँये चरनारविन्द में-

10. गोपद	11.जांबु	12.धनुष
13.मीन	14.त्रिकोन	15.अर्द्धचन्द्र
16.व्योम		

ता पाछें श्रीस्वामिनीजी को सिंगार श्रीयमुनाजी ललिताजी दोउ मिलि के किये। तहाँ श्रीमस्तक ते लें चरनारविन्द तोंई। पुखराज की जोड मोतिन सों लसत धराये। ता पाछे दोउ स्वरूप गादी तकियान पर भेले विराजे। तहाँ बसन्ती सखी ने एक जडाउ आरसी सन्मुख आगे धरी। तहाँ परस्पर हास्य-विनोद नाना प्रकार के करन लागे। ता पाछे श्री स्वामिनीजी ने बसन्ती सखी कों आज्ञा दीनी, जो तुम श्रीयमुनाजी, श्रीचंद्रावलीजी, श्रीललिताजी, श्रीविसाखाजी इन चारोन को सिंगार वेगि ही करिकें हमारे पास पधरावो। ता पाछे छेओं सखीन ने चारो स्वरूपन कों श्रृंगार वेगि ही करिके आपुके पास पधराये। ता

पाछे वसन्ती सखीने अत्तर समर्पिके रूपा के चौकी पट्टान पर सोने के छैं डबरा बड़े गोपीवल्लभ भोग समर्पे। तिनकी विगत :-

एक डबरा में केशरी मलाई के लडुवा। सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ के। दूसरे डबरा में केशरी बरफी, सो श्री स्वामिनीजी के मनोरथ की। तीसरे डबरा में केशरी पेड़ा, श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ के। चौथे डबरा में केशरी खुरचन, सो श्री यमुनाजी के मनोरथ के। पाँचमें डबरा में केशरी गुंझीया, सो श्रीललिताजी के मनोरथ की। छटमें डबरा में केशरी सकलपारा, सो श्रीविशाखाजी के मनोरथ की।

ये छै सामग्री दूधघर की गोपीवल्लभ भोग में सब सखीन ने समर्पिकें विनती करी, जो कृपासिंधु अरोगिये। सो ताही समय नाना प्रकार के हास्यविनोद सों अरोगिवे लगे। और अरोगते अरोगते अपने श्रीहस्त में दोउ स्वरूपन ने जितनेक ब्रजभक्त सामने हते तिन सबनकों महाप्रसाद अपने अपने थार तें सों दियो।

ता पाछे बसंती सखी ने बीड़ा अरोगाय कें बिनती करी, जो महाराज ! यह मनोरथ तो

श्रीस्वामिनीजी को पूरन कियो। अब राज ! मेरे मनोरथ की लतानिकुंज में पधारिकें मेरो मनोरथ पूरन करो। सो यह बसन्ती सखी की सुनिकें छैओं स्वरूप लता निकुंज में पधारे। तहाँ बसन्ती सखीनें अति सुगंधित एक बडो डोल पुखराज को जडाउ ता उपर नाना भाँति के पुष्पलतान सों रचना कियो। सो छैओ स्वरूप देखिकें अति प्रसन्न भये।सो ताही समय जुगल स्वरूप कों डोल में पधराये। तहाँ एक ओर श्रीचन्द्रावलीजी और श्रीविशाखाजी झुलावें हैं। दूसरी आडी श्रीयमुनाजी, श्रीललिताजी, दोनो झुलावें हैं। और रागिनी सब नृत्य गान करे हैं।

ता पाछें बसंती सखीनें खेल को सब साज साम्हे धरयो। जो अबीर, गुलाल, रंग, चोबा, चन्दन, अत्तर, अरगजा, आदि अनेक कुमकुमा पिचकारी आदि। सब डोल के सन्मुख धरें छोटी बड़ी पिचकारी श्रीहस्त में दिये।

सो प्रथम एक खेल श्रीयमुनाजी अपने श्रीहस्तसों किये। तहां रंग गुलाल बहोंत छिरक्यो।

ता पाछे नाना प्रकार की सामग्री डोल में बसंती सखी नें आरोगाई। पाछे सोने के थार में आरती

कीनी।

ता पाछें श्रीचन्द्रावली जी के मनोरथ को दूसरो खेल। तहॉं भोग धरें पाछें मोती की आरती श्रीचन्द्रावलीजी ने कीनी।

पाछें तीसरो खेल श्रीललिताजी के मनोरथ को। तहॉं भोग धरें पाछें मोतीकी आरती ललिताजी किये।

पाछें चौथो खेल श्रीविशाखाजी के मनोरथ को। तामें अनसखडी, दूधघर, नागरी, सब अरोगे।

तामें मनोरथ की छैओं सामग्री की विगत:-

श्रीठाकुरजी के मनोरथ को मोहनथार। श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ को मेवाती गूंझा। श्रीयमुनाजी के मनोरथ को दूध को अधरामृत। श्रीचंद्रावलीजी के मनोरथ- कों घेवर। श्रीललिताजी के मनोरथ को मुखविलास। श्री विशाखाजी के मनोरथ को खरमंडा।

या भॉंति छैओ सामग्री अरोगाये ! पाछें होरी खिलाये। ताहीसों छेले भोग में अवार लागत हैं।

ता पाछें बसंती सखीने रंग गुलाल, चोबा, बहोत छिरकि कें एक डोल नवीन रचना करिकें गायो। सो ताही कीर्तन के अनुसार एक डोल कृष्णदासजी ने गायो है। सो डोल:-

राग सारंग

डोल झूलत हैं पिय प्यारी।
नंदनंदन वृषभानु दुलारी।।
कमल नैन पर केसरि डारि।
अबीर गुलाल करी अंधियारी।।1।।
झूलत श्याम झूलावति नारि।
हँस हँसि देत परस्पर गारी।।
गावति गीत दै दै कर तारि।
बाजत वेनु परम रुचिकारी।।2।।
भीज रही तन तनसुख सारी।
खेल मच्यो वृन्दावन भारी।।
रसिक सिरोमनि कुंजबिहारी।
''कृष्णदास'' प्रभु गिरिधरधारी।।3।।

भाव प्रकाशः - तहां कोई सन्देह करें जो यह डोल कृष्णदास कृत है। तहां कहत हैं, जो अष्टसखी को प्रागट्य अष्टसखा है। सो जो लीला निकुंज की देखे हैं सो बाहर वरनन करत है। तातें बाहर कृष्णदास ने अनुभव करि के गायो। जो ललिताजी को प्रागट्य कृष्णदास को है। सो उनकी वार्ता के भाव में कहि आये हैं। ऐसे ही और सखान को हू जाननो।

सो या भाँति डोल झूले हैं, तब ताही समें ग्रीष्म

1643 की प्रति में सर्वत्र भाव प्रकाश प्राप्त नहीं होता है।

सखीनें दण्डवत् विनती करी। जो कृपानाथ ! मेरी ग्रीष्म निकुंजन में पधारो। ताही समें छेओं स्वरूप डोल विजय करिकै ग्रीष्म निकुंज में पधारे। सो ग्रीष्म निकुंज की शोभा कैसी देखी ? जो - मानो, शीतल सुगन्ध छाय रही है। तहाँ श्रीयमुनाजी की रतन जटित सीढीन ऊपर यमुना जल के तरंगन की लहर देखि, छेओं स्वरूप श्रीयमुनाजी में पधारिकें बिहार करन लागे। ता पाछें ग्रीष्म सखी नें जो वस्त्र डोल के रंग के पहिराये हते, सो सब बडे कराय कैं ता पाछे दूसरे हरे रंग के कोमल वस्त्र मिट्टी के अत्तर सों लसत छेओं स्वरूपन को अंगीकार कराये। और पन्ना मोतीन के आभरन को जोड रूचि अनुसार धराये। ता पाछें ग्रीष्म सखी ने छैओं स्वरूपन को भोजन घर में पधराय कैं राजभोग समर्पे। सो राजभोग की त्यारी कैसी ? जो सामग्री को पार नांही। सखड़ी अनसखड़ी दूधघर, नागरी आदि जितनी सामग्री करिवे की रीति हैं सो सब ललिताजी की आज्ञा सों ग्रीष्म सखी ने सब ब्रजभक्तन कों संग ले कैं करी। ता पाछें ग्रीष्म सखीने मनोरथ की सखड़ी में सों सामग्री सन्मुख भोग धरी। ताकी विगत:-

श्री ठाकुरजी के मनोरथ को मेवा भात केसरीया। और दूसरो बासोंदी भात श्री स्वामिनीजी के मनोरथ को। तीसरो सिखरनभात श्रीयमुनाजी के मनोरथ को। चौथी सुफेद भात श्रीचंद्रावली के मनोरथ को। पाँचमों दही भात श्रीललिताजी के मनोरथ को। छठमो खट्टो भात श्रीविसाखाजी के मनोरथ को।

या भाँति छैओ भात ग्रष्म सखीनें सोने के थार में भरिभरि कैं साम्हें धरे। और सामग्री को तो पार नाँहि। जो छप्पनभोग तें हू अधिकि सामग्री राज भोग में ग्रीष्म सखी ने अरोगाई।

और श्रीभागवत में चारि प्रकार की सामग्री कहे हैं जो भक्ष्य, भोज्य, चोस्य, लेह। सो या चारों प्रकार की सब सामग्री श्रीललिताजी के मनोरथ में श्रीठाकुरजी आरोगे। ता पाछें ग्रीष्म सखीने छैओं झारी सोने की जमुनाजल सों भरिकैं पधराई। पाछें नाना भांति हास्य विनोद सों श्रीठाकुरजी आपु आरोगे श्रीठाकुरजी ने श्रीहस्त सों महाप्रसाद सब ब्रजभक्तन को लिवाये। ता पाछे ग्रीष्म सखी ने विनती करी, जो महाराज ! मेरी पुष्प निकुंज में पधारो। मेरी फूल मण्डली को मनोर्थ हैं। सो विनती ग्रीष्म सखी की सुनि कैं पुष्प

निकुंज में पधारे। तहाँ पुष्प निकुंज की चित्रसारी में शोभा देखिके फूलन के गादी तकियान के उपर छैंओं स्वरूप विराजे। तहाँ फूलन की चित्रसारी की अद्‌भुत शोभा देखी। जो चारो आडी चित्रसारी के गुलाब जल कें फुहारे चलि रहे हैं। और नाना भाँति के पुष्पन की सुगंध छाय रही हैं। ता पाछे ग्रीष्म सखीनें एक सोना की चोकी ऊपर एक सोना के थार में छै डबरान में दूधघर की शीतल सामग्री भोग धरी ताकी विगत:-

एक डबरा में तो बासोंदी श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ की। एक डबरा में मिश्री को पना सो श्रीठाकुरजी के मनोरथ को। एक डबरा में मिलाई सो श्रीयमुनाजी के मनोरथ की। एक डबरा में शिखरन सो श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ की। एक डबरा में दूध सो श्री ललिताजी के मनोरथ को। एक डबरा में सलोंनी छाछ सो श्रीबिसाखाजी के मनोरथ की।

या भाँति छैओंन के मनोरथ के छै डबरान में तें सोने के चमचान सों रंचक रंचक आरोगे। ता पाछें ग्रीष्म सखीनें छेंऔ स्वरूपन कों बीरी अरोगाई।

।। पाछें ग्रीष्म सखी ने श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के मुखारविंद के दरशन करिकैं श्रीठाकुरजी के मनकी जानी। जो आपुके मन में पोढिवे की इच्छा हैं। ताही समें ग्रीष्मसखीनें तहाँ फूलन की चित्रसारी के भीतर एक तिवारी फूलन की अद्‌भुत रचना करिकें, फूलन की सिज्या तकिया गेंदुआ आदि सब सिद्ध करे। ।। पाछें ग्रीष्म सखी नें अत्तर समर्पि कैं चौपड़ बिछाय के अनोसर किये। ता समें को एक कीर्तन मैंने (चतुर्भुजदास) गायो। सो कीर्तन:-

राग सारंग

फूलनकी मंडली मनोहर,
बैठे जहाँ रसिक पियप्यारी।
सोभित सबैं साज नाना विधि कैं,
फूलन के भवन परम रुचिकारी।।1।।
फूलन के खंभ फूलन की चोखंडी,
फूलन बनी सुदेस तिवारी।
फूलन के झूमिका फूलन के झरोखा,
फूलन के छज्जे छवि भारी।।2।।
सघनफूल चहूँ ओर कंगुरा,
फूलन बन्दनवार सँवारी।
फूलनके कलसा अति सोभित,

फूलन रचि विचित्र चित्रसारी।।3।।
फूलन की सेज गेंदुआ,
तकिया फूलन की माला मनुहारी।
''चतुर्भुजदास'' प्रभु फूले राधा,
उर रस फूले श्रीगोवर्धनधारी।।4।।

ता पाछें दस घरी दिन पाछेलो रह्यो ताही समें बरषा सखी फूलन की चित्रसारी के साम्हें आयकें अद्‌भुत बीन बजाय कें विनती करी, जो-राज ! मेरी बरषा निकुंज में पधारिये। ताहि समें ग्रीष्म सखी ने चित्रसारी के किंवार खोले। तहाँ छैओं स्वरूप चोपड़ खेलें हैं। श्रीस्वामिनीजी की आडी श्रीयमुनाजी, श्रीललिताजी, और श्रीठाकुरजी की आडी श्रीचन्द्रावलीजी श्रीविसाखाजी। और श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी दोऊ श्रीहस्त सों पासा पड़ाऊ डारें हैं। सो तब बरखा सखी ने फेरि विनती कीनी, जो - राज ! मेरी बरखा निकुंज में पधारो। इतनी विनती सुनिकें छैओं स्वरूप प्रसन्न होय कैं बरखा निकुंज में पधारे। सो बरखा निकुंज की अद्‌भुत अलौकिक शोभा देखी, जो- मानिक के जडाऊ की सब चित्रसारी रची हैं। ताके भीतर रेशम के गादी तकिया हैं। सो ताके ऊपर

दोओं स्वरूप बिराजे। ता पाछें बरषा सखीने उत्थापन भोग भली भाँति सों समर्प्यो। तहाँ नाना प्रकार के फूल और फूलन की सामग्री आरोगाई। तहाँ छै सामग्री मनोरथ की, ताकी विगत:-

जो श्रीठाकुरजी के मनोरथ के एक थार में मधूरामल। और श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ की एक थार में आमकी बरफी और श्रीयमुनाजी के मनोरथ की एक थार में फालसान की बरफी। श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ की एक थार में गिरि की बरफी। और श्रीललिताजी के मनोरथ की एक थार में खरबूजा को मगद। श्रीविसाखा के मनोरथ के एक थार में जिमीकंद के लडुवा।

सो या भाँति सो सामग्री तो बहोत आरोगे परि यहाँ संक्षेप सों कहे हैं। ता पाछें बरषा सखी ने बीरी आरोगाई। पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों दूसरो सिंगार धरायो। तहाँ कसूमल चूनरी के वस्त्र गोटा किनारी के पहराये। और मानिक की जोड नख तें सिख लों भली भाँति सों धराई। ता पाछें बरखा सखी ने बिनती करी, जो- कृपानाथ ! मेरो मनोरथ हिंडोरा झूलायवे को है। सो मेरी पुष्पलता

निकुंज की चित्रसारी में पधारो। ताही समें छैंओं स्वरूप हिंडोरा को मनोरथ सुनिकें बडी प्रीति सों पधारे। तहाँ चित्रसारी के भीतर एक मानिक के हिंडोरा उपर पुष्पन की अद्‌भुत रचना करी हैं। और नाना प्रकार के फूलन सों हिंडोरा छाय रह्‌यो है। और सन्मुख हिंडोरा के श्रीयमुनाजी तरंग सहित बहे हैं। और चारों आडी सों बादर झुक रहयो है और बादल घनघोरे हैं। बिजली चमके हैं। और मन्द मन्द फुहार परति हैं।

सो तहां श्री ठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी दोउ स्वरूपन को बरखा सखी ने हिंडोरा के भीतर पधराये। और हिंडोरा के एक आडी श्रीयमुनाजी श्रीललिताजी झुलावें हैं। और दूसरी आडी श्रीचन्द्रावलीजी श्रीविसाखाजी झुलावें हैं। और सब सुरन सों राग रागिनी अपनो समो साधे हैं। और वरखा सखी आदि सों लें सब सखी पंखा करति हैं।

पाछें बरखा सखी ने नाना भाँति की सामग्री हिंडोरा में आरोगाई। तहां मनोरथ की छै सामग्री कहत हैं:-

बादामपाक श्रीठाकुरजी के मनोरथ को। पिस्तापाक

श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ को। चिंरोजीपाक श्रीयमुनाजी के मनोरथ को। गिरीपाक श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ को बीज को पाक श्रीललिताजी के मनोरथ को। मखानापाक श्रीविसाखाजी के मनोरथ को।

सो या भांति सामग्री अरोगाई। पाछें वरसाने वारी ने नाना भांति के हिंडोरा झुलाये। नाना प्रकार के हिंडोरा गाये। ताहीं समें को अनुभव करि के गोविन्दस्वामी ने एक हिंडोरा गायो:-

राग मलार

मदन मोहन झूलत सुरंग हिंडोरें।
वरनवरन की चूनरि पहरें
ब्रज वधू चहुँ ओरें।।1।।
राग मलार अलापत
सप्तसुरन तीन ग्राम जोरें।
मदन मोहन जू की या छवि उपर
''गोविन्द'' बलि तृन तोरें।।2।।

ता पाछें सायंकाल को समय भयो। तब वाही समें शरद सखीने आयकें बिनती कीनी, जो-राज ! मेरी शरद निकुंज में पधारो। ताही समें श्रीठाकुरजी हिंडोरा विजय करिके सब ब्रज भक्तन सहित शरद

निकुंज में पधारे। सो शरद निकुंज की कैसी रचना करी है ? जो हीरा की जटित सब चित्रसारी, तामें रतनमय दीपक प्रकासित हैं। और चन्द्रकाँत मनि सहस्त्र चंद्रमा को प्रकाश समान सो, श्रीठाकुरजी ने धरयो है। पाछें शरद सखी ने छैंओं स्वरूपन कों चित्रसारी के भीतर गादी तकियान के ऊपर पधराये। पाछें शरद सखी ने सोना के थार में मोती की संध्या आरती उतारी। ता पाछे शरद सैन भोग में नाना प्रकार की सामग्री सखडी अनसखडी सब तथा शरद के उत्सव के मनोरथ की सामग्री धरी। ताकी विगत:-

मोहनथार श्रीठाकुरजी के मनोरथ को। मगद के लडुवा श्रीस्वामिनीजी मनोरथ के। बासोंदी श्रीयमुनाजी के मनोरथ की। चन्द्रकला श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ की। दूधपाक श्रीललिताजी के मनोरथ की। फेनी श्री विसाखाजी के मनोरथ की।

या भांति छैओं सामिग्री मनोरथ की श्वेत रूपा के थारन में भरि भरि के साम्हें पधराये। पाछें छैओं झारी सोने की जमुना जल सों भरिकें पधराई।

ता पाछें शरद सखी ने भांति मनुहार करिकें सैन भोग अरोगाये। पाछें आचमन कराय बीरो

सुगन्धी सहित अरोगाई। ताही समें शरद सखी ने विनती करी, जो मेरी रासकी विनती हैं। सो पहले आप दोउ स्वरूप ने आज्ञा करी ही जो तुम्हारी चित्रसारी में हम रास करेंगे सो मैंने सुधि कराई हैं। ऐसी विनती शरद सखी की सुनि कैं श्रीस्वामिनीजी प्रियतम कौं आज्ञा किये, जो- हां सखी ! तैयारी करो। ऐसी सुनिकैं शरद सखी प्रसन्न होय कैं अपनी निकुंज की भीतर सो बड़ी बड़ी गांठि वस्त्रन की सखीन सों लिवाय कैं लाई। सो आभरन की पेटी बंटा ब्रजभक्त के हाथ पधराय लाई। और आरसी, कांगसो, अत्तर, फूलेल, चोवा, चन्दन,काजर, कुंकुम टीकी आदि जितनी रासकी उपयोगी वस्तु हैं सो सब शरद सखी ने करिके दोउ स्वरूपन सो विनती करी, जो सब त्यारी सिद्ध है।

ता पाछें श्रीस्वामिनीजी ने ठाकुरजी सों कह्यो, जो प्राणप्यारे ! अब रासकी पोषक पहिरो। ताही समें दोऊ स्वरूप गादी तकियान सों उठिकैं सिंगार भवन में पधारे। सोना की चौकी ऊपर विराजे।

सो तब शरद सखी ने कहो, महाराज ! हिंडोरा की पोषाक बढ़ी करिये। ताही समें ललिताजी और

बसंतो सखी दोउ श्रीस्वामिनीजी के दोउ बाजू ठाढे है नाना भांति के सिंगार करें हैं। और श्रीविसाखाजी और शरद सखी दोउ श्रीठाकुरजी के सिंगार की परचारगी करें हैं। और श्रीचन्द्रावलीजी के पास सिसरि सखी बरषा सखी ये दोउ परचारगी करें हैं। और श्रीयमुनाजी के पास ग्रीष्म तथा हेमन्त सखी परचारगी करें हैं।

सो या भाँति चारों स्वरूप को सिंगार आठो सखीन ने मिलिकें नखतें सिख तांइ भली भांति सों करें। ताकी शोभा कहां ताँई कहें। जो श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी दोउ स्वरूप जडाउ चौकी ऊपर भेले बिराजे। और श्रीठाकुरजी की दाहिनी ओर श्री यमुनाजी सिंगार करिकें बिराजें हैं। और श्रीस्वामिनीजी के पास श्रीचन्द्रावलीजी सिंगार करिकैं बिराजे हैं। सो चारयो स्वरूप को एक सो सिंगार हैं। सुफेद जरीके कोमल वस्त्र धरे हैं। और हीरा की जडाउ मोती मिश्रित नख सों सिख तांई पहेरे हैं। सो आजुको सिंगार देखि कें दामिनी लजायमान होत हैं। तहां श्रीठाकुरजी ने मुकुट काछिनी को सिंगार कियो है(40)

पाछें श्रीठाकुरजी शरद सखी सों आज्ञा किये, जो तुम आठों सखी तथा सब ब्रजभक्त तथा छत्तीसों रागिनी सब बेगि सिंगार करो। जरी के वस्त्र तथा हीरा मोतिन के गहना नख तें सिख तांई पहिरो। ऐसी आज्ञा सुनिकें शरद सखी मुसिक्याय कैं कहे, जो आज्ञा ! सो ताही समें शरद सखीने सब सखीन सों कह्यो, जो तुम सब कृपा करिकें बेगि बेगि अपनो सिंगार करो। तब वाही समय सब गोपीजन प्रसन्न होय कैं अपुनो अपुनो सिंगार किये।

सो गोपीजन कैसे है ? जो - जिनकें श्रीअंगमें सो गुलाब के फूलन की सी सुगंध आवत हैं। ता पाछें शरद सखी नें अपुनो तथा सब ब्रजभक्तन को सिंगार करिकें, आय दंडोत किये। ताही समें श्रीठाकुरजी शरद सखी सो आज्ञा किये, जो- तुम्हारो अब कहा मनोरथ हैं ? ताही समें शरद सखी प्रसन्न होय कैं कह्यो, जो मेरी पुष्पलता निकुंज में रासस्थली के भीतर पधारो।

ताही समें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को श्रीहस्त पकरि कैं आगें पधारें। पाछें श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी आदि सबन कों शरद सखी पधराइ लाई, ता पाछें

श्रीठाकुरजी ने श्रीस्वामिनीजी कों पुष्पलता निकुंज की शोभा दिखाई। सो कैसी अलौकिक शोभा है ? जो चारों आड़ी नाना प्रकार की द्रुमवेलीन की लतानकी हरियाली की सुगंध छाय रही हैं। और छैओं ऋतुन के पुष्प रासोत्सव जानि कें लतान के बीच बीच खिले हैं। ऐसी पुष्प रासोत्सव जानि कें लतान के बीच बीच खिले हैं। ऐसी पुष्पलता निकुंज की शोभा देखी कें रासस्थली के भीतर पधारे। सो रासस्थली कैसी अद्भुत अलौकिक बनी हैं ? जो- जाकी शोभा सब कहवे में नांही आवे है। जो गोलचन्द्राकार एक बंगला शरद सखीने हीरान के जडाऊ को, बहोत विस्तार में रचना किये हैं। ताके बीच बीच चन्द्रकान्त मनि टांगी हैं। सो वे चन्द्रकांत मनिन को उजियारो कैसो है ? जो-एक मनिको एक सहस्त्र चन्द्रमाको सो प्रकाश होय रह्यो हैं।

भावप्रकाश- सो काहेतें ? जो-श्रीगोकुलचन्द्रमा यहां रास करेंगे, तासों लौकिक चन्द्रमा की तो यहां आइवे की गम्य नांही है।

और रासमंडल के भीतर जरीको चन्दौवा

बाँध्यो है। सो तामें मोतिन की झालरि की अति शोभा है। गलसूलन के गद्दान की बिछायत बिछि रही है। ताके ऊपर कारचोबी के गादी तकियान के ऊपर छैओं स्वरूप विराजे। ता पाछें शरद सखी नें एक अत्तर की जड़ाऊ पेटी खोलि के साम्हें धरी। तामें छै शीशी अत्तर की छैंओं स्वरूपन के मनोरथ की समर्पी ताकी विगत:-

श्रीठाकुरजी के मनोरथ को केवरा को अत्तर। श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ को केसरी गुलाब को अत्तर। श्रीयमुनाजी के मनोरथ को केतकी को अत्तर। श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ को सुफेद गुलाब को अत्तर। श्रीललिताजी के मनोरथ को अम्बर को अत्तर। और श्रीविसाखाजी के मनोरथ को मोतिया को।

सो इन छैओ शीसीन में सो श्रीठाकुरजी ने श्रीहस्त सों श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग में समर्प्यो। पाछें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी को अत्तर लगायो। पाछें श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी ने श्रीठाकुरजी के श्रीहस्त सो लेकें श्रीठाकुरजी के कपोलन सों लगायो। पाछें श्रीठाकुरजी ने श्रीललिताजी, श्रीविशाखाजी,

आदि सब ब्रजभक्तन कों एक एक को बुलाय बुलाय कैं सबन को अपने श्रीहस्त सों चोलीनसों, कपोलन सों लगाये। ता पाछें शरद सखी ने सोना के जडाउ नूपुर चारों स्वरूपन को पहिराये। और सोना के घूंघरू सब सखीन को पहिराये।

ता पाछें श्रीठाकुरजी ने, श्रीस्वामिनीजी सों कही, हे रासेश्वर ! अब रास प्रगट कीजे। सो ताही समें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीयमुनाजी श्रीचंद्रावलिजी सों कह्यो, जो अब रास कौन भाँति प्रगट कीजे ? ताही समय दोनों स्वरूपन ने कह्यो, जो- हे प्रान प्यारी ! हम तो तुम्हारी आज्ञाकारी हैं। जो आजु को मनोरथ तो आपुको ही हैं। जैसे आपुकी आज्ञा होय जैसे मण्डली करें। तब श्रीस्वामिनीजी श्रीयमुनाजी सों आज्ञा किये जो मैंने एक बात सुनी है। जो इनने एक समें राधा सहचरी के संग प्रथम रास कियो हो। तहां गोपीन को छोडिकें अन्तरध्यान होइकैं पाछें राधा सहचरी की वन में इकेली छोडि गये। इतनी बात सुनिकें श्रीयमुनाजी कही, जो प्यारी ! हमनेहू सुनी हैं। ता पाछे श्रीस्वामिनीजी ने सब व्रजभक्तन सों बुलाय कैं कह्यो जो तुम हम

चाहो सो करो। तब रासमण्डली की रचना करे हैं। तामें सब मण्डलीन में तुम दो दो गोपी एक एक कृष्ण के दोऊ बाजू ठाढे करिकै श्रीहस्तसों छोडियो नाहीं।

ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी दोऊ स्वरूपन की वृष्टि फूलन की आडी गई। ताही समें नाना भांति के फूल सब वृक्षन में सों आपके सामही परवे लगे। ताही समें श्रीठाकुरजी शरद सखी सों आज्ञा किये, जो तुम पुष्पन की माला लतान सों मिश्रित वेगि अंगीकार करावो। तब शरद सखीने बीरी अरोगाई के बिनती करी, जो अब रास प्रगट कीजिये। ताही समें श्रीठाकुरजी ने छत्तीसों रागिनीन कों बुलाइके आज्ञा करी जो-तुम छत्तीसों बाजे रास उपयोगी हैं सो मधुर सुरसों बजाओं और तुम या समें की छै रागिनी जो हो सो नृत्यगान करो सो इतनी आज्ञा श्रीठाकुरजी की सुनि के सब रागिनी नृत्य गान करिवे लगी। सो श्रीठाकुरजी गान सुनि कैं सबकी बड़ाइ करी तब रंचक इनके नृत्य भये पाछे श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो- हे प्रिय, प्रान प्यारे ! जो अब आपु नृत्य कीजिये। ताही समें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी

की आज्ञा लै इकेलें नाना प्रकार के संगीत आदि सों नृत्य किये। तब श्रीस्वामिनीजी ने बहोत बडाई करी। पाछे सब ब्रजभक्तन नें पुष्पन की श्रीठाकुरजी के उपर बरसा बरसाई। ता पाछें श्रीठाकुरजी ने श्रीस्वामिनीजी सों कह्यो, हे प्यारी ! अब आपु भी पधारो। ताही समें श्रीरासेश्वरी, श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी, दोऊन कों संग ले रास में पधारे। तब श्रीस्वामिनीजी आपु कहें, जो -- प्यारे ! अब कौन भाँति मंडली प्रगट करिये ? तब यह सुनिकें श्रीठाकुरजी आपु कहें, जो हे प्यारी ! आज्ञा होय तो अष्ट दल कमल की रचना करें और आज्ञा होय तो खट दल कमल की रचना करें। तब श्रीकिशोरी जी कहें, जो प्यारे ! मेरो मनोरथ तो खटऋतु को है। सो अब खटदल कमल की रचना वेगि करो। तब वाही समें श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजी दोउ स्वरूप ने मिलि के खटदल कमल की रचना करी सो ताकी विगत:-

प्रथम अष्टकृष्ण षोडश स्वामिनी। दूसरे दल में षोडश कृष्ण बत्तीस गोपी, तीसरे दल में शत कृष्ण जुगल शत गोपी, चौथे दल में सहस्त्र कृष्ण जुगल सहस्त्र गोपी। पंचम दल में लक्ष कृष्ण जुगल लक्ष

गोपी। षष्ठ दलमें कोटि कृष्ण जुगल कोटि गोपी।

या भाँति षटदल की रचना करी। तहाँ पाँचो दल में द्वै द्वै गोपी बीच एक एक कृष्ण भुज सों भुज जोरि कै बिराजे। तिनके भीतर निजमंडली में आठ कृष्ण सोरह स्वामिनी। ये षटदल की रचना की विगत कहत हैं:-

जो सात स्वरूप श्रीकृष्ण के तिनके एक एक के दोय दोय बाजुबंद द्वय द्वय स्वरूप श्रीस्वामिनीजी के भुज सों भुज जोरें बीच में करणिका के उपर श्रीगोवर्धनधर नंदकिशोर बिराजे। जिनके बामभाग श्रीस्वामिनीजी और दक्षिण भाग श्रीयमुनाजी श्रीहस्त सों हस्त जोरें। या भाँति षटदल कमल करणिका सहित रासमंडली की रचना करे। सो बाही समें रासमंडली की कैसी अलौकिक रचना भई । सौ कहिवे कों पार नांही। और शरद की रात की चांदनी अत्यंत शोभा देत हैं। और ब्रज नारी के मध्य श्रीस्वामिनीजी अत्यंत शोभा देत हैं। ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सब स्वरूप मिलि नृत्य करन लागे। तहाँ नाना भाँति के नृत्य किये। तहां एक शोभा अद्भुत प्रगट भई। जो श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के

रासमण्डल में श्रीस्वामिनीजीके मुखारविंद को प्रतिबिंब श्रीठाकुरजी के मुखारविन्द में परत हैं। तब श्रीठाकुरजी को मुखारविंद हरित होत है। जैसे नीलकांति मनीको प्रकाश सुवरन के सनमुख जाय तो मरकत मनीको सो दरशन होय। जैसे यहाँ नीलकांति मनी श्रीठाकुरजी को श्रीअंग और सुवरनवत् श्रीस्वामिनीजी को श्रीअंग। सो परस्पर प्रतिबिंब परत है। तब श्रीठाकुरजी को मुखारविंद हरित होत है। ताही समय ब्रजभक्तन ने एक नयो नाम प्रगट कियो। जो "हरिकृष्ण"। ऐसो अद्‌भुत शोभा रास की देखिकैं परमानन्ददासजी ने एक कीर्तन कह्यो, सो कीर्तन:-

राग मालव

व्रजबनिता मध्य रसिक राधिका
बनी शरद की राति हो।
निरतत ततथेई गिरधरनागर
गौरस्याम अंग कांति हो।।1।।
द्वै द्वै गोपी बिच बिच माधो
बनौ अनुपम भांति हो।
जय जय शब्द उच्चारत सुरमुनि
कुसुमन बरखा अघाति हो।।2।।
निरखी थक्यो शशि आयो

शीश पर क्यों हूं न होत प्रभात हो।
''परमानन्द''मिले यह अवसर
धनी है आज की बात हो।।3।।

ता पाछें हेमंत सखी ने दंडवत् विनती करी, जो-राज ! मेरी हेमंत निकुंज में पधारिये। ताही समें शरद सखी आज्ञा मांगि कैं रास की आरती किये।

पाछें छैंओं स्वरूप व्रजभक्तन सहित हेमंत निकुंज में पधारे। सो श्रीयमुनाजी के मनोरथ की हेमंत निकुंज। सो कैसी अद्‌भुत शोभा देखी ? जो-चित्रसारी मीनाकी लहेरीयाकी अद्‌भुत रचना करी हैं। तहाँ कारचोबी के गादी तकियान उपर छैंओं स्वरूप बिराजे। पाछे हेमन्त सखी ने छेओं स्वरूप के रास के वस्त्र आभरन सब बड़े करिकें दूसरे अतलस के पचरंग के धराये। और मीना के आभरन के जोड़ रूचि अनुसार अंगीकार कराये। सो श्रीयमुनाजी ने गुप्त उत्सव मानि कें कुनावारे में नाना भाँति की पुष्टि और मिष्ट सामग्री अरोगाई। तब श्रीठाकुरजी हेमंत सखी सो आज्ञा किये, जो - कछू सलोनी सामग्री परोसीये। सो वाही समें हेमंत सखीने छै प्रकार के फडफडीया घृत में तलि के पारोसे। छैओं

स्वरूपन के मनोरथ के। ताकी विगत:-

जो श्रीठाकुरजी मनोरथ के बादाम के फडफडीया। और श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ के पिस्ता के। श्रीयमुनाजी के मनोरथ के मूंग की दारि के। श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ के मखाने के श्रीललिताजी के मनोरथ के चना की दारि के। श्रीविशाखाजी के मनोरथ के आखे चनान के।

या भाँति छेओं सामग्री सलौनी अरोगे। पाछे आचमन कराय बीरी अरोगाये। ये श्रीयमुनाजी को गुप्त मनोरथ हैं। तहाँ श्रीयमुनाजी ने गुप्त श्रृंगार कियो है। जो श्रीठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी के वस्त्र आभरन पहराये, नख तें सिख तांई, श्रीस्वामिनीजी कों श्रीठाकुरजी के वस्त्र आभरन नखते सिखतांई, धराये। ता समें की सोभा उपमा कछु कहिवे में आवे नांही। जो बीच में श्रीस्वामिनीजी मुकुट काछनी धराय कें मुरली बजामें हैं। बांई ओर कों श्रीठाकुरजी नवदुलहन बनि मुसिक्यामें हैं। दांई बाजू श्रीयमुनाजी सिंगार किये विराजे हैं। ये स्यामा स्याम के दरशन करिकें सब सखी मुसिक्याय कें तृन तोरत हैं। ताई समें हेमंत सखी दंडोत बिनती करी,

जो राज ! मेरी पुष्पलता निकुंज में पधारिये। मेरो जागरन की मनोरथ सिद्ध कीजिये। ताई समें सब स्वरूप पुष्पलता निकुंज में पधारें तहाँ पुष्पलता निकुंज में एक रंग महल मीना को जडाउ अद्भुत रचना कियों है। ताके भीतर मीना के जडाउ की एक सिज्या अदभुत गादी तकिया गेंदुआ सहित बिछाई। ताके उपर श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी, दोउ स्वरूप विराजें। तहाँ सिज्या के पास सोना की चौकीन ऊपर चारों स्वरूप विराजें श्रीयमुनाजी, श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीललिताजी, श्रीविसाखाजी, और सब ब्रजभक्त सनमुख ठाड़े हैं। तहीं समें श्रीठाकुरजी ने आज्ञा करी, जो प्यारी ! अब कहा आज्ञा है ? वाही समें हेमन्त सखी ने एक सोना के थार में सुगन्धित बीरी सबन के मनोरथ की सनमुख धरी। ताकी विगत:-

जो पान श्रीठाकुरजी के मनोरथ के। इलाइची श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ की। कत्या सुगन्धी श्रीयमुनाजी के मनोरथ को। मोती को चूना श्रीचन्द्रावली जी के मनोरथ को। लोंग श्रीलतिाजी के मनोरथ की। सुपारी श्रीविशाखाजी के मनोरथ की।

या प्रकार की बीरी दोउ स्वरूप ने आरोगी।

पाछें श्रीठाकुरजी ने अपने श्रीहस्त सों श्रीयमुनाजी श्रीचन्द्रावली जी आदि सब ब्रजभक्तन कों दिये। और श्रीयमुनाजी सों आज्ञा किये, जो- हे महारानी जू ! तुम अपनी अपनी निकुंज में अपनी अपनी सिज्या उपर रंचक सोय रहों। पाछें सिसिर निकुंज में होरी खेलेंगे। सो तुम वेगि आईयो। ताही समें श्रीयमुनाजी श्रीचन्द्रावलीजी तथा ललिताजी आदि सब जूथ जों रास में हते सो सब अपनी अपनी निकुंज मेंअपनी अपनी सिज्या उपर सिंगार करि करि कैं सोंधो लगाय के पोढे। ताही समें श्रीठाकुरजी ने जितने ब्रजभक्त हते तितने ही स्वरूप धरि कें सबन की सिज्या उपर पधारि के सबन के मनोरथ सिद्ध करे।

और श्रीस्वामिनीजी के रंग महल में सिज्या उपर दोउ स्वरूप स्यामा स्याम विराजे हैं। तहाँ श्रीस्वामिनीजी सों कह्यो, अहो प्यारी ! तेरो मुख देखे चन्द्रमाकी कांति हू फीकी लागति हैं। हे प्यारी ! तेरे गले में मीना की चौकी रहत है, तिन ठौर मोकों वास दीजे। यह वचन श्रीठाकुरजी ने कह्यो तब श्रीराधे किशोरीजी कंठ लागी। तब दोउ स्वरूप रसवस भये। श्रीमदन मोहनजी कों श्रीस्वामिनीजी ने

वस किये।

ता पाछे श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो तुम मेरो सिंगार वेगि वेगि करो मेरी सखीजन सब आवेंगी। तासों तुम जैंसो सिंगार होय तैंसो वेगि करो तब। श्रीठाकुरजी ने चोटी गूंथि के वैसोही सिंगार कियो। ता पाछें श्रीठाकुरजी सिज्यासों पधारि कैं रंगमहल के किवाड खोलि दिये। ताही समें श्रीयमुनाजी श्रीचन्द्रावलीजी आदि सवन की सिज्या सों श्रीठाकुरजी पधारि के फेरि सब स्वरूपन को एक स्वरूप होय कें श्रीस्वामिनीजी के पास विराजे।

भावप्रकाश- ये श्रीठाकुरजी को नित्य को क्रम जानिये, जो प्रातः काल तें सेन पर्यंत श्रीस्वामिनीजी के पास ही एक स्वरूप तें विराजत हैं। पाछे रात्रिकों पोढती बिरीयां सब गोपीजनन के भेले विराजे हैं। और श्रीस्वामिनीजी तें श्रीठाकुरजी यह बात गुप्त राखे।

ता पाछें श्रीयमुनाजी, श्रीचंद्रावलीजी, श्रीललिताजी आदि सब ब्रजभक्त अपनी अपनी निकुंजन सों हेमन्त निकुंज में रंग महल के भीतर आय विराजे। ताही समें शिशिर सखी ने दंडोत विनती करी, जो राज ! मेरी शिशिर निकुंज में पधारिये। ताही समें

श्रीठाकुरजी शिशिर सखी कों आज्ञा किये, जो तुम हमारो मुकुट काछनी को सिंगार वेगि करो। ता पाछें शिशिर सखी ने श्रीस्वामिनीजी सों विनती करी जो- हे लडिलीजू ! आपकी दूसरो सिंगार करिवे की मरजी हैं ? तब श्रीस्वामिनीजी मुसिक्याय कैं शिशिर सखी सों आज्ञा किये, जो- हे सखी ! आज तो मैं यही मुकुट काछनी को सिंगार राखोंगी। तब शिशिर सखी ने श्रीठाकुरजी को मुकुट काछनी को सिंगार दूसरो कियो। रात्रि को त्रिया को सिंगार बड़ो कियो। और जोड मीना की तथा बंसी लकुट दोउ स्वरूपन को मीनाकी धराई। ता पाछें छैंओं स्वरूप सब ब्रजभक्तन सहित हेमन्त निकुंज में सों शिशिर निकुंज में पधारे। तहॉं शिशिर निकुंज की दो चित्रसारी प्रथम कहे हैं। सो तामें पहलें पुष्पलतामय चित्रसारी के सोने के बंगला के भीतर गादी तकियान उपर विराजे। सो ता समें की शोभा कहा कहिये ? जो बीच में जुगल कृष्ण मुकुट धरें विराजे हैं ? और एक ओर को श्रीयमुनाजी, श्रीललिताजी, विराजे है। और दूसरी ओर को श्रीचन्द्रावलीजी, श्रीविसाखाजी बिराजे हैं। ता पाछें शिशिर सखी ने विनती करी,

जो राज ! मेरो होरी खिलायवे को मनोरथ है। इह विनती सुनिके दोउ स्वरूप प्रसन्न होय के आज्ञा किये जो तुम वेगि होरी खिलावो। ताही समें शिशिर सखी ने बंगला के साम्हें दूसरे गादी तकिया बिछाये। खेल को सब साज दोउ और गादी तकियान के साम्हें मांडयो।

तहाँ दो डबरा सोना के केशरी गुलाल के दोउ ओर को भरि के धरे। सो श्रीस्वामिनीजी के मनोरथ के। और लाल गुलाल के श्रीठाकुरजी के मनोरथ के। दोउ ओर चोवा के, दोउ डबरा सो श्रीयमुनाजी के मनोरथ के। और अबीर के दोउ डबरा श्रीचन्द्रावलीजी के मनोरथ के दोउ ओर। और हरित गुलाल के दोउ डबरा श्रीविसाखाजी के मनोरथ के दोउ ओर।

और सखीन के मनोरथ के रंग, गुलाल, अत्तर, अरगजा कुमकुम आदि सब धरें।

ता पाछें शिशिर सखी नें दोय थार सामग्री के भोग धरें। तामें एक में मेवा मिश्री के टूक। दूसरे थार में माखन मिश्री। सो छैओं स्वरूप आरोगे। ता पाछैं श्रीठाकुरजी ने अपने श्रीहस्त सों सब ब्रजभक्तन कों महा प्रसाद दिये। ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी

दोउ स्वरूप गादी तकियान सों पाधारि के होरी को रास करिवे लागे। और सब रागरागिनी गायवे बजायवे लगीं। तहाँ नाना भाँति सों रास करें। तहाँ एक शोभा अद्‌भुत प्रगट भई। जो श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी को सिंगार आपुनो आपु करे हैं। दोउ स्वरूप रास में बांह जोटि करि नृत्य करत हैं। ता समें सब सखीजन भ्रमित होत हैं। और कोई सखीजन कहत हैं यह श्रीस्वामिनीजी हैं। कोई गोपीजन कहत हैं यह श्रीठाकुरजी हैं। यह स्वामिनीजी ने एक सो रंग, रूप मुद्रा, भेष प्रगट कियो है। तहाँ गोपीजन के हृदय कोई भ्रम जानि के श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी गान करिवे लगे। ता समे को एक कीर्तन श्रीगुसांईजी ने गायो हैं। सो कीर्तन:-

राग देसरी

सखीरी मैं हों नंदकिसोर।
ये वृषभानुदुलारी प्यारी बनी नटवर वर जोर।1।
मैं दधिदान लेत वृन्दावन रोकत हों बरिजोर।
''श्रीविट्‌ठल'' गिरिधरनलाल मैं ये मेरी चित्तचोर।2।

सो या भाँति सों रास कियो। ता पाछें दोउ गादी तकियान उपर दोउ स्वरूप आमें साम्हें बिराजे। और श्रीस्वामिनीजी के पास श्रीयमुनाजी, श्रीललिताजी

दोउ बाजू बिराजे। और दूसरी गादी पें श्रीठाकुरजी के पास श्रीचंद्रावलीजी, श्रीविसाखाजी दोउ बाजू विराजे। ता पाछें सिसिर सखी नें गुलालन के, कुमकुमान के, थार भरि भरिकें साम्हें धरे। और विनती किये जो-राज ! आज होरी खेलिये ! ताही समें श्रीठाकुरजी सोना की पिचकारी श्रीहस्त में लैंकें श्रीस्वामिनीजी के उपर रंग की बरषा बरसाई। दूसरी बाजूतें श्रीस्वामिनीजी ने पिचकारी ले श्रीठाकुरजी के उपर चलाई। पाछें श्रीयमुनाजी सब सखीन सों आज्ञा किये तुम सब पिचकारी चलाओं। और या आडीसो श्रीचन्द्रावलीजी आज्ञा किये तुम सब पिचकारी चलाओं। ताही समें दोनो आडीसो पिचकारीन की बरसा होन लगी। ता पाछें सब रंग के गुलालन की पोटरी चलिवे लगी और परस्पर चोबाकी अंजली भरि भरि सब छिरकन लागे। या भाँति होरी की शोभा देखिंके सिसिर सखी ने श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सों बिनती करी, जो-राज ! अब दूसरे वस्त्र धरीये। यह वस्त्र सब रंग में भींजि गये हैं। ताही समें सिसिर सखी नें दूसरे वस्त्र स्याम अतलस रूई के सब स्वरूपन कों धराए। और नीलम के जडाउ के गहना रूचि अनुसार धराये। पाछे सब

सखीजन श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी कों संग लैकें नीलम की जडाउ चित्रसारी के भीतर सिज्या के उपर पधराय। ता पाछें श्रीठाकुरजी सब गोपीजनन सों आज्ञा किये, जो-तुम अपनी अपनी निकुंजजन में जाय सोओ। प्रात:काल मंगला के समें बेगि आओगे। ता पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी बीरा अरोगि के दोउ स्वरूप भेलें पोढें।

सो याही भाँति नित्य नौतन रासादिलीला नाना प्रकार सों छैंओं निकुंजन में श्रीगोवर्द्धनधर सदा सर्वदा करत हैं।

सो एक दिन शरद निकुंज में हीराके जडाउ की चित्रसारी के भीतर रास करत श्रीठाकुरजी कों भूतल के दैवी जीवन की सुधि आई। जो मेरे दैवी जीव बहोत काल सों आसुरी सृष्टि में मिलि रहे हैं। तिनकों भूतल में प्रगट होइकें मैं अंगीकार करूँगा। ताही समें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी के मनकी जानी, जो-ये भूतल पैं पधारेंगे। ताही समें दोनों स्वरूपन के मुखारविंद सों विरह की स्वाँस निकली। ताही स्वाँस को एक स्वरूप मनोहर सुन्दर आनन्दमय प्रगट भयो। सोई स्वरूप श्रीवल्लभ श्रीमहाप्रभुजी को

जानिए।

ता पाछें ने लक्षण प्रगट होय कें दक्षिण में चंपारण्य वन में अग्निकुंड के भीतर विराजे। सो लक्ष्मणभट्ट जी तथा उनकी स्त्री इलम्माजी कों गर्भस्त्राव के समें दरसन भये। सो अद्भुत अलौकिक बालक देखे। तिनके दरशन करिकें श्रीलक्ष्मणभट्टजी ने अपनी स्त्री सों कही जो ये बालक तुम गोदि में पधराय लेउ। तब श्रीइलम्माजीने कह्यो, जो अग्नि के भीतर ते पधराईवे की मेरी सामर्थ्य नाँही। तब श्रीलक्ष्मणभट्टजी ने कहयो, तुम अग्नि सों विनती करो।

ता पाछें इलम्माजी ने अग्नि कों दण्डवत् करि विनती कीनी। जो ये बालक हमारो होय तो शीतल होउ। ताही समें अग्नि शीतल भई। और बालक कों श्रीइलम्माजी ने गोदि में पधराय लिये। ता पाछें श्रीलक्ष्मणभट्टजी और श्रीइलम्ममाजी श्रीमहाप्रभुजी कों काशी पधराये। सो कितनेक दिन ताँई श्रीमहाप्रभुजी की बाललीला को सुख अनुभव कियो। पाछें श्रीलक्ष्मणभट्टजी ने श्रीमहाप्रभुजी कों यज्ञापवित् भली भाँति सो कियो। ता पाछें श्रीमहाप्रभुजी ने

चारि वेद षटशास्त्र आदि अंगीकार किये।

ता पाछें श्रीलक्ष्मणभट्टजी बालाजी की यात्रा कों सकुटुम्ब पधारें। तहॉं श्रीलक्ष्मणभट्टजी तो श्रीक्ष्मणबालाजी के स्परूप में प्रवेश भये। और श्रीइलम्माजी कछुक दिन रहि कैं श्रीमदनमोहनजी आपुने श्रीठाकुरजी को पधराय कैं काशी में विराजे। और श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आपु पृथ्वी परिकमा करिवे कों पधारे। तहॉं मारग में श्रीदामोदरदासजी तथा कृष्णदास मेघन अदि वैष्णव कों अंगीकार किये। और दैवी जीवन को उद्धार किये। और चरित्र तो आपु के अनन्त हैं सो कहॉं तॉई कहिए। परन्तु सूक्ष्मरीति सों स्तटप्रकार सों कहत हैं:-

प्रथम-आपु भूतल में प्रगट होई कैं दैवी जीवन कों ब्रह्म-सम्बन्ध कराई कैं श्रीनन्दनन्दन पूरन पुरूषोत्तम कों अंगीकार कराये।

द्वितीय- श्रीमहाप्रभुजी ने श्रीभागवत उपर तिलक रूप श्रीसुबोधिनी करि कैं गूढ अर्थ प्रकाश कियें।

तृतीय-श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने तीन बार पृथ्वी परिकमा करि कैं सर्व तीर्थ सनाय किये।

चतुर्थ- श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने मायामत को

।

खंडन सर्व देश में करि कै भक्तिमार्ग स्थापन किये।

पंचम- श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने पुष्टिमार्ग रीति सों सेवा करि कैं कलियुग के धर्म सब गुप्त करि कैं, द्वापर के धर्म प्रगट किये।

षष्टम- श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी अपने सेवकन की महिमा दिखाये ! जो भक्ति और मुक्ति शिव ब्रह्मादिकन सों न दीनी जाय सो आपुने सेवकन द्वारा दिवाई। जो गदाधरदासजी ने माधोदासजी कों भक्ति दीनी। और प्रभुदासजी ने अहीरी कों मुक्ति दीनी।

पाछे बहोत जीवने श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के शरन आइवे की विनती कीनी। तब आज्ञा किये, जो तुम कों श्रीगुसाँईजी अंगीकार करेंगे। ता पाछें कृष्णदास मेघनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी ने आज्ञा करी, जो ये उनके जीव हैं।

भाव प्रकाश- सो काहें तें जो दैवी जीव सात्विक,राजस, तामस, निर्गुण इन चारयो सृष्टि में मिलि रहे हैं। सो निर्गुण के मुख्य चौरासी भक्त कों श्रीमहाप्रभुजी ने अंगीकार किये। और सात्विक, रासज, तामस, इन तीन्यों मिलाय कैं दो सौ बावन भये, सो इन तीन्यों जूथन के मुख्य दो सौ बावन भक्तन कों

श्रीगुसाँईजी अंगीकार करेंगे। और जीव तो बहोत शरणि आवेंगे।

सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुने 84 वैष्णवन के उपर कृपा करि कैं श्रीठाकुरजी की सेवा, पथराय कैं सेवा विधि सों कराये। तहां नवधा भक्ति श्रीभगवत में कहें हैं। सो नवधा भवित और एक प्रेमलक्षण भक्ति सों ये दस भवित और एक प्रेमलक्षण भक्ति सो ये दस भक्ति रीआचार्यजी महाप्रभु ने अपने एक एक सेवक कों श्रीठाकुरजी की सेवा कराय कैं सिद्ध करी। और विष्णु भगवान ने तो पहले एक एक भक्ति एक एक भक्त कों बड़ी काष्टा सों दीनी हती। सो या प्रकार हैं: -

1. श्रवन- राजा परीक्षित कों, 2. कीर्तन- शुकदेवजी कों, 3. स्मरण- प्रहलादजी कों, 4. अर्चन- राजा पृथु कों, 5.पाद सेवन- श्रीलक्ष्मीजी कों, 6. वंदन- अक्रुरजी कों, 7. दास्य- हनुमान जी कों, 8. सख्य- अर्जुन कों 9. निवेदन- राजा बलि कों।

यह तो मर्यादा मार्ग में एक एक भक्ति दीनी है। अब यह एतन्मार्ग, सो पुष्टिमार्ग में, श्रीमहाप्रभुजी ने सबन कों दीनी है। सो कहत है: -

1 प्रथम श्रवन- सो कथा वार्ता सुने बिना वैष्णवन कों रहयो न जाय।

2 द्वितीय कीर्तन- सो सेवा कीर्तन बिना होइ सके

नांही।

3. तृतीय सुमिरन मोठो और नरोत पंचाक्षर तथा अष्टाक्षर सुमरन किये बिना वैष्णव महाप्रसाद लेइ सके नांही।

4. चतुर्थ अर्चन- सो साक्षात स्नान, सिंगार प्रभु कों करें ही है।

5. पंचम पादसेवन- सो श्रीठाकुरजी अपने माथे पधराये है तिनके चरण स्पर्श आदि करत हैं।

6. षष्ठम वंदन- सो श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में वैष्णव बारम्बार स्तुति और वंदन करे है।

7. सप्तम दास्य- सो पुष्टिमार्ग में वैष्णव सदा दास हैं।

8. अष्टम सख्य- श्रीठाकुरजी श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसांईजी के सेवकन सों सख्य भाव सवारी राखत है। सो गोविन्द स्वामी तथा गज्जन की वार्ता में कहे हैं। कबहू घोडा करत हैं, कबहू गाय करत हैं।

9.नवम निवेदन- तो तुलसी दे कैं श्रीठाकुरजी के चरणारविन्द में निवेदन करावे हैं।

10. दसम प्रेंमलक्षण- सो श्रीमहाप्रभुजी ने प्रगट होय कैं अपने वैष्णवन को दीनी हैं। जो गोपी की भावना रहस्य लीला में तुम्हारी भक्ति पूरन होउ। सो आशीर्वाद दिये हैं। ऐसे श्रीमहाप्रभुजी परम दयाल हैं।

ता पाछें तीसरी आज्ञा महाप्रभुजी को भई, जो तुम लीला मेंबेगि पधारो। तब श्रीमहाप्रभुजी अपने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो- अब हम लीला निकुंज में पधरेंगे। इतनी सुनि कैं सेवक सब उदास होयवे लगे। और विनती कीनी, जो- कृपानाथ ! आपु के दरशन बिना हम कैसे रहेंगे ? तब आपु प्रसन्न होई आज्ञा किये, जो मैं खट प्रकार सों दरशन सदैव दउंगों। सो षट प्रकार कहत हैं:-

1. प्रथम तो अपने वंश द्वारा
2. द्वितीय बैठक द्वारा
3. तृतीय श्रीपादुकाजी द्वारा
4. चतुर्थ चित्र द्वारा
5. पंचम ग्रन्थ द्वारा
6. षष्टम माला सों

ये खटप्रकार सों दरशन देउंगो। और तुम सबन कों ये षट संपत्ति स्वरूप गिनाये तिनकों भोग धरिवे की आज्ञा हैं।

ता पाछेंश्रीमहाप्रभुजी ने श्रीगुसाँईजीके हृदय में पुष्टिमार्ग ग्रन्थ तथा अपनो "अशेष" स्वरूप (ईश्वर महात्म्य स्वरूप) स्थापन किये। तब श्रीगुसाँई जी

बरस 15 के हते।

ता पाछें श्रीगनाथप्रभुजी आपु काशी जी श्रीगंगाजी में पधारि कै आगे पुंज द्वारा आपु गिरिराज में अपनी बैठक में पधारे। ता पाछें श्रीगुसाँई जी श्रीनाथजी की सेवा वैभव सहित किये।

और एक समें श्रीगुसाँईजी संवत 1623 में परदेश पधारे हते। तब श्रीगिरिराजजी सों श्रीनाथ जी श्रीमथुराजी सतघरा में श्रीगुसाँईजी के घर पधारे। तहाँ मास।।2।। दिन।।22।। तांई श्रीगुसाँईजी के घर विराजे। सो तहाँ नाना प्रकार की सामग्री बहु बेटीन ने आरोगाई, और होरी खिलाई। पाछें श्रीगुसाँईजी को श्रीगिरिराजी आईवे को समें भयो ताही दिन श्रीनाथजी गिरिराजजी पधारे।

तब सब समाचार श्रीनाथ जी ने श्रीगुसाँईजी सो कहे। सो श्रीगुसाँईजी सुनि कैं बहुत प्रसन्न भये।

ता पाछें श्रीगुसाँईजी केतेक दिन पाछें अडेल सों सब कुटुम्ब सहित श्रीमथुराजी पधारें। सो छैओं बालकन को प्रागट्य अडेल को है।

और संवत 1627 में श्रीमथुराजी सों गोकुल पधारे। तहाँ हवेली तथा एक मन्दिर सिद्ध करायो। ताकी नीम जादवेंद्रदास ने खोदी। ता पाछें सातमें लालजी श्रीघनश्यामजी मिती मगशर वदी 13 संवत 1628 प्रगट भये।

ता पाछें श्रीगुसाँई श्रीविट्ठलनाथजी श्रीनवनीतप्रिया जी की सैन आरती करि कैं श्रीगोकुलजी तें श्रीमथुराजी ब्रजयात्रा करिवे कों पधारे। तहाँ प्रथम विश्रांतघाट पें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की वैठक में भोग धरि कैं पाछें श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी कों भोग धरि कैं नैम लीनो। ता पाछें ब्रज चौरासी कोस की प्रदक्षिणा करि कैं जितने तीरथ और स्थल गुप्त व्हे गये हते, सो सब आपुन फेरि प्रगट किये। सो श्रीबज्रनाभजी कों प्रागट्‌य करे तो बहोत काल भयो। तासो फेरि नवीन आपुने किये। ता पाछें यात्रा पूरन करि कैं फेरि श्रीगोकुल पधारे। ता पाछें कितनेक दिन ताँई श्रीनवनीतप्रियाजी कों सिंगार धरायो। फेरि श्रीगोपालपुर पधारि कैं श्रीनाथजी को राजभोग सराय बीरी अरोगाई। पाछें राजभोग आरती करि अपनी बैठक में भोजन करि कै गादी तकियान पर बिराजे । नन्ददास आदि

भगवदीय सों वचनामृत कहे।

पाछें एक समें श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियाजी के मन्दिर में बिराज कें सातों बालकन कों बुलायकें आपुने आज्ञा दीनी। जो तुम एक एक स्वरूप पधराय कें न्यारे न्यारे सेवा सिंगार करो। तब श्रीगिरिधरजी ने विनती कीनी, जो राज ! आपु जिनके माथे जो स्वरूप पधराय देउगे सो तिनकी सेवा करेंगे। यह सुनिकें श्रीगुसाँईजी बहोत प्रसन्न भये। सो एक सिंघासन पै सब स्वरूप विराजत है। सो श्रीगुसाँईजी तथा सातों बालक मिलिकें सेवा करते। सो गुसाँईजी ने न्यारे न्यारे सबनके माथे पधराये।

भाव प्रकाश- सो या प्रकार-
श्रीगिरिधरजी के माथे श्रीमथुरेशजी।
श्रीगोविंदरायजी के माथे श्री विट्ठलेशरायजी।
श्रीबालकृष्णजी के माथे श्रीद्वारिकानाथजी।
श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के माथे श्रीगोकुलनाथजी।
श्रीरघुनाथजी के माथे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी।
श्रीयदुनाथजी के माथे श्रीबालकृष्णजी।
श्रीघनश्यामजी के माथे श्रीमदनमोहनजी

पधरायवे की आज्ञा करी ता समें श्रीयदुनाथजी महाराज ने विनती करी, जो महाराज ये तो बहोंत छोटे

स्वरूप है। मेरी तो बड़े स्वरूप में रुचि है। ता समें श्रीगुसाँईजी आज्ञा किये जो तुम बड़े महाराज हों। श्रीठाकुरजी के स्वरूप में छोटो कहा मोटो कहा ? पाछे श्रीगुसाँईजी ने फिर बड़े सिंहासन पर पधराइ के आज्ञा करी, जो तुम्हारों मन होइ तब पधराइ लीजो। श्रीधनश्यामजी के माथे श्रीमदनमोहनजी पधराये।

पाछे श्रीनवनीतप्रियाजी की सेवा अपने माथे राखी।

पाछे एक दिन श्रीनाथजी ने श्रीगिरिधरजी सों आज्ञा करी, तुम श्रीगुसांईजी सों कहियो जो- तुमने सातो स्वरूप सातो बालकन के माथे पधराये हैं, तिन स्वरूपन सहित मैं अन्नकूट अरोगूंगो। तब श्रीगिरधरजी बिनती किये, जो आज्ञा। ता पाछे श्रीगुसाँईजी श्रीगोकुलजी सों श्रीनवनीतप्रियजी कों सिंगार धराइ के आपु श्रीगोपालपुर पधारे। श्रीनाथजी की राजभोग आरती करि कैं अपनी बैठक में पधारे, ता पाछें भोजन करि कैं गादी तकियान पर बिराजे। तब श्रीगिरिधरजी भोजन करि कैं श्रीगुसाँईजी के पास पधारि कैं दंडौत विनती कीनी, जो - काकाजी ! मोकों आज श्रीजी ने आज्ञा करी जो सातों स्वरूपन सहित मैं अन्नकूट अरोगूँगो।

जो तुम श्रीगुसाँईजी सों ऐसी आज्ञा करोगे। जो मैं अन्नकूट अब के तब अरोगूंगो जब सातों स्वरूप [illegible] पधराओगे। तब यह बात श्रीगुसाँईजी सुनि कै चुप होय रहे। पाछे आज्ञा करी जो श्रीजी की इच्छा होयगी सोई करेंगे।

पाछे श्रीगुसाँईजी ने श्रीगोपालपुर में सात मन्दिर नये सिद्ध किये। फेरि श्रीनाथजी की आज्ञा तें श्रीगुसाँईजी ने श्रीगोकुल ते सातों स्वरूपन कों श्रीगोपालपुर पधराये। तहाँ श्रीमथुरानाथजी, श्रीद्वारकानाथजी, श्रीगोकुलनाथजी, श्रीगोकुलचन्द्रमाजी, श्रीविट्ठलनाथजी, श्रीमदनमोहनजी ये छैओं स्वरूप तो पालकीन में पधराये। और नवनीतप्रियाजी झांपी में पधारे। और श्रीबालकृष्णजी कों श्रीद्वारकानाथजी की पालकी में पधराये। श्रीनटवरजी कों श्रीमथुरानाथजी की गोदि में पधराये।

या भाँति श्रीगुसाँईजी सातों बालक सहित बहुबेटीन संग समाज लै कैं गाजे बाजें सहित गोपालपुर पधारि कैं अपने अपने मन्दिरन में विराजे। तहाँ श्रीगुसाँईजी ने पाट बैठारि कैं उच्छव बधाई बहोत मानी।

ता पाछे श्रीगुसाँईजी ने आठों सखान कूं बुलाय

के आज्ञा दीनी। जो तुम एक एक मन्दिर में एक एक स्वरूप के इहाँ कीर्तन सेवा करो। तब सब सखान ने मिलि कै। दण्डौत करी, पाछें विनती कीनी, जो राज ! आपु कृपा करिकैं जा जा स्वरूप के इहाँ की आज्ञा करो ता ताके इहाँ हम सेवा करें। तब श्रीगुसाँईजी ने कृपा करिकैं सेवा बांटी। ताकी विगत:-

1. श्रीजी के इहाँ कुंभनदासजी
2. श्रीमथुरेशजी के इहाँ सूरदासजी
3. श्रीविट्ठनाथजी के इहाँ छीतस्वामीजी
4. श्रीद्वारकानाथजी के इहाँ गोविंदस्वामीजी
5. श्रीगोकुलनाथजी के इहाँ मैं(चतुर्भुजदासजी)
6. श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के इहाँ नन्ददासजी
7. श्रीनवनीतप्रियाजी के इहाँ परमानन्ददासजी
8. श्रीमदनमोहनजी के इहाँ कृष्णदासजी।

या प्रकार आठों सखान कों आठों मंदिरन के कीर्तन की सेवा सोंपी

।। इति श्रीचतुर्भुजदास कृत खटऋतु वार्ता सम्पूर्ण ।।

।। श्रीमद् वल्लभकुल की प्रागट्य ।।

अथ श्रीमद्वल्लभ कुल को प्रागट्य लिख्यो है:

श्रीगंगाबेटीजी ने पत्र विष्णुदास कों लिख्यो सो लिख्यते:-

।। श्री हरि: ।।

तैलंग देश में <u>कारककुंभ</u> गाम है। तहाँ मूलपुरूष यज्ञनारायण सोमयागी। तत्सुत गंगाधर सोमयाजी। तत्सुत गणपति सोमयागी। तत्सुत वल्लभभट्ट। तत्सुत <u>लक्ष्मणभट्ट</u> तिनकी स्त्री लक्ष्मीजी नाम विधान ईल्लमाजी। तत्सुत श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु प्रागट्य <u>चंपारण</u> देशे।

संवत 1535 शाके 1400 वैसाख वदी ।। दिने <u>सोमवार</u>। वर्ष 52 दिन 67। सुख दरसन दियो है। संवत 1587 अंतर्धान लीला दिखाई। अषाढ़ सुदी 3 (लोक) त्याग किये। अक्काजी महालक्ष्मीजी स्त्री को

जतीपुरा वाली प्रति में जो मेरे पास है, यह प्रारंभिक पंक्ति बीच के पत्र के साथ लिखी है। किन्तु आन्योर और गोवर्द्धनवाली प्रतियों में जो शायद सं.1800 के पूर्व की प्रतिलिपियाँ ज्ञात होती हैं यह पंक्ति प्रारम्भ में ही दी गई है।

नाम। तत्सुत दोय। प्रथम श्रीगोपीनाथजी को जन्म संवत 1567 के भाद्रपद वदी 12। द्वितीय पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी को प्रागट्य संवत 1572 वर्षे शाके 1437 प्रवर्तमाने पौष मासे कृष्णपक्षे 9 घडी 60 हस्त नक्षत्र घडी 26 पल 14 अ...... दिने। उदयात् घडी 9-21 <u>समय</u> धनसंक्रांति अंश 1 कला 14 समय प्रागट्य। वर्ष 70 दिन 28 लौ सुख दियो। संवत् 1642 महावदी 7 आसुर व्यामोह लीला दिखाई। श्रीगुसाँईजी के बहुजी। प्रथम रूक्मिणी बहुजी द्वितीय पद्मावती बहुजी। तत्सुत 7। प्रथम श्रीगिरिधरजी को जन्म संवत् 1597 के कार्तिक सुदी 12 बहुजी नाम

''कारक.....'' जतीपुरा वाली प्रति में खंडित तीन अक्षर ही प्राप्त होते है।

जतीपुरा वाली प्रति में इतना अंश खण्डित होने से प्राप्त नहीं है।

प्रागट्य चंपारण देशे जतीपुरा वाली प्रति में

कविकेशव किशोर की वंशावली में भी जिसकी रचना वि. सं. 1800 के पूर्व हुई है, सोमवार ही प्राप्त होता हैं। देखो कांकरोली से प्रकाशित ''श्रीमहाप्रभुजी को प्रागट्य वार्ता''। गणित से भी उदयात् शुद्ध एकादशी उस वर्ष के वैशाख कृष्ण पक्ष की सोमवार को ही आती है। देखो ''अनुग्रह'' के वि. सं. 2000 के अंको में दिया हुआ गणित

घडी 21 समये जतीपुरा की प्रति में

श्रीभामिनी बहुजी। दूसरे श्रीगोविन्दरायजी को जन्म, संवत, 1599 के कार्तिक वदी 8। बहुजी को नाम श्रीराणी बहुजी। तीसरे श्रीबालकृष्णजी को जन्म संवत 1606 के आसो वदी 13। बहुजी को नाम श्रीकमला बहुजी। चौथे श्रीगोकुलनाथजी को जन्म संवत 1608 के मार्गशिर्ष सुदी 7। बहुजी को नाम श्रीपार्वती बहुजी। पाँचमें श्रीरघुनाथजी को जन्म संवत 1611 के कार्तिक सुदी 12। बहुजी नाम श्रीजानकीजी बहुजी। छठे श्रीयदुनाथजी को जन्म संवत 1616 के चैत्र सुदि 6 बहुजी को नाम श्रीमहाराणी बहुजी। सातमें श्रीघनश्यामजी को जन्म संवत 1628 के कार्तिक वदी 13 बहुजी को नाम श्रीकृष्णावती बहुजी। तिनमें पुत्र 6 प्रागट्य श्रीरुक्मिणी बहुजी के गर्भ ते। और पुत्र 1 श्रीघनश्यामजी को प्रागट्य श्रीपद्मावती बहुजी के गर्भ [illegible] ते। ये सकल स्वरूप के जन्म दिवस को विचार लिख्यो है।

श्रीहरि:। अब श्रीआचार्यजी की [illegible] [illegible] / [illegible]

सं. 1600 जतीपुरा की प्रति में।

भावप्रत जतीपुरा वाली प्रति

जतीपुरा की प्रति में [illegible] तब श्रीगुसांईजी [illegible] श्रीआचार्यजी

गोघाट स्नान करत हुते। तब [illegible] [illegible] तब [illegible] [illegible]

आये तब [illegible] [illegible] लिखे हैं।

पधारे सो लिख्यते (जतीपुरा की प्रतिमें यहाँ गंगाबेटी और विष्णुदासजी का उल्लेख है) अब

1. प्रथम श्रीनवनीतप्रियाजी महावन श्रीयमुनाजी में ते प्रगटे। सो श्रीआचार्यजी को प्राप्त भये।

2. दूसरे ठाकुर श्रीविट्ठलनाथजी सों काशी में एक ब्राह्मण कों आज्ञा भई श्रीवल्लभ दीक्षित के घर पधराउ। तब वह ब्राह्मण पधराय गयो। आज्ञा ते। जो तुम्हारे घर प्रगट होउँगी।

3. तीसरे ठाकुर श्रीद्वारिकानाथजी कन्नोज में दरजी के घरसो पधराय लयाये श्रीजी की आज्ञा ते श्रीआचार्यजी ने पास बैठाए। कहे जो सामग्री उत्तम तें उत्तम समर्पियो

4. अब चौथे ठाकुरजी श्रीगोकुलनाथजी श्रीअक्काजी पधराय ल्याये श्रीआचार्यजी के साथ आए तब पधरावत आये

5. अब पाँचवे श्रीगोकुलचन्द्रमाजी महावन ते पधारे। नारायणदास ब्रह्मचारी को सेवा दिये।

6. छठे श्रीमथुरानाथजी कोईला के घाट के

''क्षत्री के घरसों'' जतीपुरा की प्रति में।

जतीपुरा की प्रति में ''श्रीमदनमोहनजी आचार्यजी के सेव्य हैं'' इतना विशेष प्राप्त है।

मेवाड में ते पधारे सो कन्नौज पद्मनाभदास ब्राह्मण के इहाँ श्रीआचार्यजी पधराये।

7. सातवें श्री[illegible]जी सो श्रीआचार्यजी की माता इल्लमाजी के पास हते तहाँ ते पधराए।

अब श्रीगोवर्धननाथजी प्रगट भये सो श्रीगोवर्धन पर्वत में संवत 14[illegible] के श्रावण [illegible] [illegible] [illegible] मंगलराय गोरवा को आज्ञा भई। सो उहाँ तें पाछे संवत 1535 में वैशाख वदी 11 को मुखारविन्द को प्रागट्य भयो। पाछे संवत 1556 में श्रीमहाप्रभुजी ने पास बैठारे। पाछे संवत 1559 के वैशाख सुदी 3 पूरणमलने मन्दिर बनवायो सो वर्ष 4 लौ काम चल्यो। पाछे शिखर मात्र बाकी रहयो। संवत 1563 के वैशाख सुदी 3 श्रीगोवर्धननाथजी मन्दिर में सिघासन बिराजे। पाछे संवत 1630 में श्रीगुसाँईजी शैया मन्दिर मणिकोठा बनवायो। सिरियाराज ने [illegible]

पाछें संवत 1556 के सावन सुदी 3 पूरणमल्लने मन्दिर बनवायो। सो वर्ष 4 लों काम चल्यो। पाछें शिखर मात्र बाकी रहयो। संवत 15[illegible] के वैशाख सुदी 3 गोवर्द्धननाथजी मन्दिर में सिंहासन पे बिराजे'' जतीपुरा वाली प्रति में

''सकल [illegible]'' जतीपुरा की प्रति मे

मोर [illegible],

जतीपुरा की प्रति में नहीं है।

कयो। मोंह(सिलि) श्रीगोवर्धननाथजी हुते।

अब श्रीगोवर्धननाथजी के श्रीअंग के तथा सब जगह के चिन्ह है सो लिखत हैं। सुआ बीच। शैया मन्दिर की ओर मुख। ताके आसपास दोउ कोने में दोउ स्वरूप। दाहिने श्रीहस्त के पास पीठकमें मेढा है। वाके नीचे फणिधर सर्प है। ताके नीचे चरण के पास गाय 3 हैं। तामें दोय प्रगट हैं। कए कंदरा में, मुंह बाहिर हैं। वा पर एक सर्प चल्यो जात हैं। बांई ओर एक सर्प हैं। ताके नीचे एक नरसिंहजी को स्वरूप है तथा पर्वत की शिला को भाव है। बांये चरन के पास मोर दो। पीछे पीठक समचोरस है। रीअंग के चिन्ह। शिखाको जूडा बीच है। श्रीकर्ण सम हैं छेद युक्त हैं। नाभि के भीतर छिद्र है। श्रीकंठ के आभरन सहज हैं। दुलरी पर्यंत। अंग या भाँति को। चिंन्ह हृदे विषेहै। यज्ञोपवीत है। यज्ञोपवीत भीतर तीन मणि । दाहिनी जघ्डा उपर गांछिठ है। दाहिने श्रीहस्त कटि प्रदेश पर मुठटी बाँधे है। बाँये श्री हस्त सहज की नसन गुंजल है ।। दाहिने श्रीहस्त में कडा के उपर दाग रहो है। वनमाला सहजकी दोउ श्री हस्त के स्वंध के नहचे बाहु पर है। गुल्फते। उपर

है। चरनारविंद बाम तें। दाहिनें करकौ अंगुठा उंचो है। ऊपर तो । नखभूषण तें नही। नीचे चरनारविंद तें अंगुल 4 नीचौ आसन कोऊँचों है। दुलरी को फुदना दाहिनी ओर है। बस लेखे सहज । सहज को तनिया है। श्रीहस्त में सहज को तनिया है । श्रीहस्त में सहज के कड़ा है।

अब श्रीनंदजूको उत्सव पोष सुदी 8; श्रीमदानंदजी को उत्सव माघ वदी 4;(मारू 1) श्रीबलदेवजी को उत्सव मार्गशीर्ष सुदी 15 । श्रीयशोदाजी को उत्सव माघ सुदी 6 श्रीचन्द्रावलीजी को उत्सव भाद्र पद सुदी 5, श्रीब्रजसुन्दरीजी को उत्सव भाद्रपद सुदी 10, श्रीब्रजमंगलाजू को उत्सव भाद्रपद सुदी 13, श्री[illegible]जू को उत्सव भाद्रपद वदी 3 (भाद्र?)

श्रीजी आप कूस में प्रगटे सो उत्सव अगहन सुदी 2 कार्तिक सुदी 10 कंस लीला। मार्गशीर्ष सुदी 15 बछहरन लीला। संवत 1585 में श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिकानाथजी के दरशन कों पधारे। संवतादि-वैशाख सुदी 3 त्रेतायुगादि। माघ सुदि 7 द्वापरयुगादि। कार्तिक सुदी 9 सत्युगादि आश्विनी वदी 13 कलियुगादि।

श्री हरिः। श्रीगुसाँईजी 6 बेर गुजराज पधारे।

1. प्रथम ता संवत 1600 में अडेल ते पधारे।

2. दूसरे संवत 1613 में अडेल ते पधारे।

3. तीसरे संवत 1621 में मथुरा ते पधारे।

4. चौथे संवत 1623 में फाल्गुन वदी 7 श्रीनाथजी श्रीगोवर्द्धन पर्वततें श्रीमथुराजी श्रीगुसाँईजी के घर पधारे। तब श्रीगुसाँईजी गुजरात हते। श्रीगिरिधरजी प्रभृति घर हते सों सेवा किये। पाछे वैशाख सुदी 14 के दिन निज मंदिर में पधारे।

5. पांचमी बेर संवत 1638 में श्रीगोकुल ते पधारे।

6. छठी वेर संवत 1638 में श्रीगोकुल ते पधारे। तब श्रीगिरिधरजी संग हते।

पाछें संवत 1616 में माघ वदी 13 श्रीगुसाँईजी पुरूषोत्तम क्षेत्र पधारे। तब साथ श्रीरूक्मणीजी और गिरिधरजी हुते। रासा सुतार साथ हुतो।

श्रीगुसाँईजी संवत 1621 में श्रीगोकुल वास किये। कितने दिन पाछे मथुरा में रहे। पाछे फेर संवत 1628 के फाल्गुन वदी 7 कों श्रीगोकुलवास किये। सब बालक विराजमान। श्रीगुसाँईजी वृद्धावस्था अँगीकार किये।

।। इति श्रीमद् वल्लभ कुल को प्रागट्य संपूर्ण ।।